अध्याय : 3

कमलेश्वर के प्रमुख उपन्यासों के नारी पात्र

अध्याय : 3

कमलेश्वर के उपन्यासों के नारी पात्र

कमलेश्वर एक जागरूक कथाकार हैं। उन्होंने समकालीन राजनीतिक कुचक्र को भी आधार बनाया है। कमलेश्वर के उपन्यासों में नारी पात्रों की विशेषताएँ अपनी कुछ विशेषताएँ प्रमुख रही हैं। उपन्यास को सुगठित, सरल एवं रोचक बनाने का प्रयास भी नारी पात्र करते हैं। जीवन के संघर्ष, कटुता एवं यथार्थ का चित्रण करनेवाली नारी ही है।

कमलेश्वर के उपन्यासों में नारी के जीवन में जो चढ़ाव-उतार आते हैं वही वर्णन उन्होंने चित्रित किया है। नारी में उदारता, सौहार्द, सहनशीलता, प्रेम, संकोचशीलता, औदार्य ये सभी भाव मौजूद होते हैं। वह जीवन में आनेवाले हर सुख-दुःख का सामना करती ही रहती हैं।

कमलेश्वर के उपन्यास में नारी प्रमुख रही है। इस उपन्यास में असहाय और दयनीय परिस्थितियों का चित्रण नारी के माध्यम से चित्रीत किया गया है। सभी उपन्यासों में निम्न-मध्यवर्ग का बिखराव और टूटन, आर्थिक विषमताओं का सम्बन्ध नारी रूपायित करती है। इस प्रकार नारी पात्र उपन्यास में रोचकता एवं कौतुहल पैदा करती हैं। पाठक के मन में औत्सुक्य बढ़ाने का प्रयास भी नारी ही करती है। इसलिए नारी पात्र महत्त्वपूर्ण है।

एक सड़क सत्तावन गलियाँ

"एक सड़क सत्तावन गलियाँ" उपन्यास में जिस परिवेश को लिया है। वह जिन्दगी के यथार्थ के धरातल पर अवस्थित है। आज़ादी के लिए लड़ने वाले मध्य और निम्नवर्ग के लोगों ने जिस नये समाज की कल्पना है उसका चित्रण इसमें किया गया है।

कम्युनिस्ट-कांग्रेस विवाद, साम्प्रदायिकता, जीवन का तनाव और प्रेम में टूटते बिखरते जीवन का यथार्थ वर्णन इसमें चित्रीत किया गया है। "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" उपन्यास में बंसिरी और कमला प्रमुख नारी पात्र हैं।

1· **बंसिरी**

बंसिरी रंगीले की बीबी है। सरनाम की ओर वह आकर्षित थी। उसके दिल में सरनाम के प्रति नफरत पैदा हो जाती है। सरनाम ने बंसिरी को एक बाजारू औरत ही समझा है। इसी कारण बंसिरी तिलमिला उठती है। वह उसको शाप भी देती है - किसी दिन मोटर में बैठा मर जायेगा। मरने की खबर मिलने के बाद बंसिरी घी के दीये जलाकर रातभर दिवाली मनाना चाहती है। बंसिरी किसी की घरवाली बनकर जीना चाहती है और यही बात बंसिरी सरनाम के सामने भी प्रकट कर देती है। "पर केवल एक क्षण····तेरा ये ताज जिस दिन गिरेगा, उसी दिन को देखने के लिए जिन्दा हूँ। औरत कहता है न मुझे। तेरे कारन औरत हुई····नहीं तो किसीकी घरवाली होकर चैन से मर जाती।"[1]

जब मुकदमा सेशन में सुपुर्द होता है तो बंसिरी बयान देने के लिए चली जाती है। पुलिस थाने में डकैती के इल्जाम में सात मुलजिमों को गिरफ्तार किया जाता है। बंसिरी को गवाह के रूप में अदालत पेश करती है तो वह फरार सरनाम के बारे में बयान देती है। बंसिरी की आँखों में बदले की परछाई थी····"मेरी बाँह पर पड़े हुए तीनों नील आज भी इसकी निशानी है पर इसकी आँखों की वह आग आज नहीं है वे फड़कते हुए नथुने मुर्दा हैं, कानों में घुसी हुई है···जब ये अपनी साथियों पर शेर की तरह गुर्राया था, इसे खूब पहचानती हूँ····अच्छी तरह जानती हूँ····।"[2]

बंसिरी डरी हुई हिरनी की तरह निकल कर आती थी। बुरी तरह डर गयी थी। बंसिरी शिला की तरह खड़ी हो जाती है। गिरधारी उसे परेशान कर के उसके बाल खींचकर बंसिरी का मुँह उपर कर देते थे। बंसिरी बुरी तरह चीखी थी। मुकदमा चलता है तो बंसिरी रोज हाजिर हो जाती थी। इजलास शुरू

होने के बाद जेल में बैठकर मिसकोट होती। बंसिरी स्वयं निरपेक्ष थी। सरनाम के दिल में बंसिरी की अजीब सी अनुभूति थी। वह एक सताई हुई दयावान नारी और एक नासमझ लडकी थी। एक हारे हुए दुश्मन की नारी थी। बंसिरी का शरीर थका हुआ था। सनसनाहट ऐसी भर गई थी जो इतना टूटन, थकान और हारी हुई झनझनाहट थी।

कलंकी अवतार के रूप में बंसिरी आती है। गजरों से लदी बनी-ठनी बंसिरी है। उसकी चाल में मद था। उसकी काजल रची आँखे सरनाम के दिल में उतरती चली गई। कृष्ण की गोपियों में सबसे ज्यादा जंच रही थी। चंवर डुलाते समय उसकी गोरी बाँह मूडती तो जैसे रोशनी बिखरती थी। सरनाम के सामने सिर्फ बंसिरी थी उसकी बाँह मरोड़ दी है, सिल्क की अंगिया फाड़ कर उसके शरीर को नाखून से चींथ डाला है, उसका बदन नीला पड़ गया है····निस्सहाय बंसिरी उसके सामने टूटी हुई है।

बंसिरी का कोई पता सरनाम को नहीं लगा। शायद धोखा हुआ है। अगर वह होती तो मिलती जरूर अवश्य ही उसे धोखा हुआ है। इस घटना का शोर बस्ती में मच गया। गिरफ्तारी नहीं हुई। कृष्ण मंडली के कुछ बाबा लोगों ने आश्रम-वाले महन्तों से मिलकर मामले को आगे बढ़ाने की कोशिश की और सफल नहीं हुए। गेंदा कवि ने फुरसत की सांस लेते हुए कहा - "ठीक है ठाकुरसाहब इसमें कोई हर्ज नहीं। फिर कोठरी की ओर देखकर उसने बड़े हर्ष से पुकारा था, "बंसिरी बिटिया किस्मत खुल गई तेरी·····"[3]

बंसिरी का नाम सुनकर सरनाम के पैर ठहर गये। बंसिरी, कौन बंसिरी। दूसरे ही क्षण में उसे लगता है कि उसने क्या कर डाला है ? और कौन होगी उसके सिवा। उसने मन को खट्ट किया। नौटंकी की बंसिरी और सतार है। गेंदाकवि के साथ रही हुई बंसिरी थी। न जाने उसने कितने गेंदा, बलराम और सतार को धोखा दिया था। उसके दिल में घमण्ड थी। उसके मन में प्रतिहिंसा की खुशी से भर जाता है। वह एक अभिमान भरी तृप्ति और एक अनूठे संतोष की मन पर कहीं कसक करनेवाली नारी थी। बंसिरी को हार-जीत का सामना करना पड़ता

है। यह उसकी दुर्दशा है।

चलने के बाद उसे लगता है सब खाली हो गया है...."खोखला... एक खाली मकान जैसा...ऐसा मकान जिसमें रहनेवाला सुधि का पाहुन एकाएक चला गया हो और सायं सायं करती गरम हवा के थपेड़ों से घर के दरवाजे और खिडकियों के पल्ल भटाभट दीवार से टकरा रहे हों...."[4] रंगीले पाँच सौ रुपये का कर्जदार होकर बंसिरी को ले आता है। मोटर के सामनेवाले मकान में उसने अपनी गृहस्थी जीवन जीते हैं। बड़ी मुश्किल से बंसिरी रंगीले की बात जानती थी। उसने गेंदाकवि से इन्कार कर दिया था। वह उसको बार बार कहती है - "मैं जहर खाऊंगी...मैं भाग जाऊंगी। रात में गला घोट दूँगी तेरा। गेंदाकवि पुराने घाघ थे, सब जानते थे कि कितनी देर का उफान है...डेढ़ दिन कोठरी बन्द किए यूंही पडी घुटती रही, उस गर्मी और अंधेरे मे...."[5] बंसिरी ने रात में एक विचार कौंधा था। सरनाम से वह कहती है अपने को बड़ा अफलातून समझता है सरनाम। बेईमान दगाबाज इज्जत से खेल गया कमीना। सरनाम का इन्तजार किया था उसे दगा देकर भाग गया था। इज्जत से ठेकेदार बन जाता है। "औरत पुकारता था, जैसे उसकी कभी कुछ भी नहीं रही।....औरत । अभी जानता नहीं औरत कितनी खूंख्वार होती है ? अब औरत बने के ही रहूँगी और एक दिन देखेगी उसे....बताइएगी उसे कि वह सिर्फ औरत है..."[6]

उसकी बाहों की उभरी हुई नसें, पसीने से चिपकी हुई कमीज और थरथराती निचुड़ गयी थी। चट्टान पर एक खरोंच से वह पागल हो जाती है। उसकी ताकत बदहवास सी होती है। गुस्से में मिट्टी के प्याले के टुकड़े बटोर देती है। उसका यह पागलपन बड़ा है। सरनाम को अड्डे पर वह रोज देखती है - टाट का पर्दा हटाकर वह खड़ी देखती ही रहती है। घर में कोई भी नहीं है। पूरा दिन यूं ही गुजर जाता है।

शिवराज नारी की छांह के लिए तरस जाता है। बंसिरी में सभी रूप का साथ मिल गया था। माँ, बहन और मित्र के रूप में उनकी विशेषता नारी के रूप में प्रस्तुत होती है। बंसिरी के लिए शिवराज बहुत बड़ा सहारा है। शिवराज

अड्डे पर खबर लेकर ही बंसिरी के पास चला जाता है। आते ही बोलता है, "चाची, आज फिर तैयारी हो रही है···वो मंगल आया है, घर पर सब तै हुआ है, मुझे जबरदस्ती अड्डे की तरफ टरका दिया·····।"[7]

बंसिरी यह बात पूछती है कि सरनाम शिवराज का उसके पास आना-जाना पसन्द क्यों नहीं करता ? वह रंगीले को कहती है, "मेरा कुछ भी खयाल करो - तुम्हें कुछ हो गया तो मैं कहाँ की रह जाऊंगी। कच्ची शराब की बोतले छुपाकर रंगीले ने घर पर रखने के बाद तूफान उठा था। इसी तरह झगड़े टंटे रोज लगे ही रहते हैं। बंसिरी सरनाम को जरा भी सह नहीं पाती थी। उसकी इस बात से रंगीले इस कश से परेशान रहता था। उसके समझ में यह नहीं आता कि वह आखिर क्या करे ? बंसिरी ने यह जानना चाहा कि कब यह लोग जा रहें हैं - फिर शिवराज को तारीख मालूम नहीं थी। बंसिरी का इशारा समझकर शिवराज लज्जित हो जाता है। जब बंसिरी उसे इस तरह धिक्कारती है तब उसका किशोर पौरुष भीतर से हुंकार उठता है। और वह अपने को आदमी महसूस करने लगता है।

शिवराज को बंसिरी की बात ही ज्यादा जँचती है। बंसिरी के पास बैठकर उसे एक अजीब-सी तृप्ति मिलती है, अद्भूत सी अनुभूति होती है। बंसिरी कभी-कभी बड़ी रहस्यमयी हो जाती है। सरनाम को बंसिरी ने सहारा दिया था और इसी बात से बंसिरी दुखी होती थी क्योंकि सरनाम अपनी बिगड़ी हुई आदतों के कारण शिवराज को बिगाड़ डाल रहा है। मौका मिलते ही वह शिवराज को ताने देकर उकसाती है और अहसास कराती है कि उसकी दशा एक गुजरी औरत से भी बदतर है। बड़े गौर से देखकर वह शिवराज में स्त्रैणता के गुण आते ही रहे हैं।····"आज भी उसने शिवराज को तर्जनी में अंगूठी पहने देखा तो कटाक्ष कर बैठी - "यें लड़कियों की तरह क्या अंगूठी पहने देखा तो क्या अंगूठी पहन रखी है····।"[8]

बंसिरी अपने गाँव के जवानों के किस्से लेकर बैठ जाती है। गाँव भर की लडकियाँ भी उस पर जान देती थी - शेर की तरह घूमना खेत में। बंसिरी

जब ऐसी बातें सुनाती है तो शिवराज अपने में सिमट जाता है और उसे पछतावा होता है कि, क्योंकि हेम के बारे में वह सब कुछ बता गया। बंसिरी बेहद परेशान थी। सरनाम के अड्डे पर दिखाई नहीं देता, जब वह आँखों के सामने होता, उसका होना अनुभव में प्रतिहिंसा धधकती रहती है और आँखों में व्याकुलता भरी छटपटाहट कुरदने लगती है। न उसका वह जीना सह नहीं पाती, न मरना चाहती है। एकाएक बाहर से आवाज सुनाई पड़ी - "रंगी - रंगी। सरनाम की आवाज थी। बंसिरी का पारा एकदम चढ़ जाता है। कान सतर करके वह बात गौर से सुनती रहती है। रंगीले त्रिपाल के एक टुकड़े में लपेटे हुए हथियार भीतर छुपाने के लिए लाया तो वह विफर उठती है···"ये यहाँ नहीं रखे जाएंगे। चाहे भगवान उतर आए पर मैं कहती हूँ इन्हें ले जाओ···नही मानोगे तो मैं निकालकर फेंक दूँगी और सब बता दूँगी····।"[9]

बंसिरी सारी शरम लिहाज छोडकर सामने आ जाती है। सरनाम पर आँख पड़ते ही प्रतिहिंसा की ज्वाला में उसका रोम झुलस उठता है "डकैती तुम करो, खतरा हम उठाएँ····"[10] बंसिरी के मुँह से आग बरसती है। एक ही झपाटे में रंगीले बंसिरी को लेकर चला जाता है। बंसिरी की चीखें सुनने के लिए वह कान खड़े ही रहे थे। जब बातें धीमी पड़ जाती है तो वह अपने मुहल्ले की तरफ चला जाता है। शिवराज एकदम मुख्तार हो जाने के बाद बंसिरी के पास नहीं आता। बंसिरी चुप हो जाती है। उसकी आँखों में बादलों की व्यथा घुमड रही थी। बंसिरी अकेली रह गई है। रंगीले गवाही देने के लिए चला जाता है। बंसिरी सचमुच मन के भीतरी गहरी लगाव से दुखी था। सोचते हुए बोली···"इस पेशे का आदमी न जाने कैसा हो जाताहै, हम जिनका पार्ट खेलते है उनका दर्द, उनकी खुशी से हममें कोई अच्छी बात पैदा होने के बजाय पूरी आदतें घर कर जाती है····इसीलिए लोगों की नजरों में गिर जाते हैं।"[11]

बंसिरी भीतर चली जाती है। बंद कोठरी में से स्वर सा फूटता है - घुट घुट कर फिर रुक जाता है। बंसिरी शान्त रही थी। रंगीले हर क्षण सतर्क रहा था। बंसिरी चुप रही रंगीले ने राहत के सांस लिया था। बंसिरी ने जान भर पायाकि आसमान फटा। सरनाम चले जाने के बाद बंसिरी ने सब भांप लिया

था, भीतर ही भीतर क्रोध से भुनी जा रही थी। ...."इतना विष है इसके काले दिन में...। बेईमान, दगाबाज, बेवफा। एक बार भी बीते हुए दिन की याद नहीं आती। हर जगह मेरी इज्जत इसके खिलौना रही है - और ही हूँ में। सराय में बिकी हुई औरत - "जब तक पूरे रुपये नहीं चुकाता वह, तब तक तुम रखो इसे।" तेरे रहन का बदला....सड़ सड़कर मरेगा...कैसा डरावना हो गया है।"[12]

बंसिरी निश्चत मतवाली थी। बंसिरी रंगीले को होनेवाली संतान की सूचना देती है। बंसिरी ने आखिरी अस्त्र फेंका। आँखों में पानी। सिसकियों में होनेवाली सन्तान की सूचना एक क्षण बाद ही उसकी आँखे अजीब घृणा से भर आयी। किसी अत्याचार की सूचना उसके चेहरे पर मँडराने लगी। उसने धीरे से कहा। "मैं अब तक चुप थी। लेकन अगर तुम सारी बात जान पाते..." मन में घृणा का तूफान आया हुआ था। उसका बस चल पाता। कैसे भी। उसे अब यह करके रहना है। यह होगा ही नहीं तो वह चली जाएगी कहीं भी। पर इस स्थिति को बर्दाश्त नहीं करेगी। रंगीले की आँखों में विस्मय भर आया। वह बोली....मैं तुम्हारी औरत हूँ न।"[13]

रंगीले ने हुंकार भरी। रंगीले की आँखों की चिनगारियाँ फूटती हैं। बंसिरी घूटनों में सिर दिए सिसकती रही। बंसिरी ने जब से शिवराज के निर्णय को सुना है तो वह खुश है। रंगीले को तीन साल की सजा मिल जाती है। तब सरनाम ही अस्पताल से बंसिरी और उसके बच्चे को लेकर रंगीले के घर आता है। "और अपनी गली के लिये मुड़ते हुए सरनाम ने हल्की सी रोने की आवाज सुनी थी। "पता नहीं बंसिरी क्यों रो पडी....यह सोचता हुआ वह अपने सुनसान घर में लौट आया था।[14]

कमला

वास्तव में कमला सोलह बरस की एक लड़की है। पर बातें तो बड़ी ही करती रहती है। शिवराज कमला से प्यार करता है। सरनाम शिवराज को समझाता है कि कमला एक बाजारू औरत है। उसका रहना बदनामी के सिवा और कुछ

नहीं है। मगर शिवराज सरनाम की बात नहीं मानता। कमला शिवराज से कहती है - "इस कार्नीवल में क्या रखा है। शिवराज मैं तार पर नाचनेवाली लड़की हूँ। यह पतला-सा तार और हर पल डगमगाते हुए कदम····कब तक साथ पाऊंगी अपने को। आखिर एक दिन····एक दिन यही तमाशा करते करते नीचे आ गिरुंगी।"[15]

शिवराज कमला को सहारा देने में विवश है। वह उससे कहता है कि तुम ब्याह करके घर बसा लो। उस पर कमला जवाब देती है - "तम मुझसे ब्याह करोगे ? उसकी आँखों में चमक तैरती रहती है। बाजा मास्टर वह चमक देखकर एकाएक घबरा जाता है - आँखो की यह दीप्ति। अचरज भरी। उत्कंठा प्यार भरी उदास थी। ऐसी चमक है जो सोलह बरस की अभागी कमला है। शिवराज कमला से कहता है····"मैं कहीं नहीं जाऊंगा कमला। ···जहाँ तुम रहोगी वही साथ रहूंगा। ऐसे ही जीवन भर····।"[16]

शिवराज कमला से शादी करने के लिए भी तैयार हो जाता है। वह कहता है "भूखा मरुंगा तो वह भी मरेगी। मैं जिऊंगा तो उसे भी जिलाऊंगा। इस बात की सूचना वह बाजा मास्टर को भी देता है। बाजा मास्टर शिवराज के इस फैसले के क्षणभर चुप हो जाता है और बहुत खुश हो जाता है। कमला का आभास भर सारी बातें सहायक होती है। उसका हृदय भर आता है - तन। मन। धन सब कमला शिवराज के लिए करेगी। प्यार से वह कहता है कमला कल और ज्यादा कमाएगी।

कमला को भी दिन में मैंनेजर कई बार बुलाता रहता है। कुछ कहता सुनता नहीं। पर वह हमेशा ही छोटी सी बात बताकर उसे शान्त कर देती है। अपनी मजबूरी छिपाती नहीं। उसका मन कड़वा हो आता है। "यह कार्नीवल ···जुए का अड्डा। जब भी मौका मिलता लोगों को भड़काता···· शहर के लोगों को जुआरी बनाने का तरीका है····"[17] कमला से यह देखा नहीं जाता। शिवराज से वह बार बार कहती है। "मास्टरजी को समझाओ।" मास्टर पर पागलपन का भूत सवार है। बाजामास्टर जिस मुहल्ले में रहता है। उसमें बात सुनासुना रही थी। लीला नाटक कम्पनी का नाटक ऐसा हो कि पहली बार में पैर जम जाए।

कमला से यह देखा नहीं जाता। वह बार बार शिवराज से कहती है।। "मास्टरजी को समझाओ।" मास्टर पर पागलपन सवार है। कमला की आँखों में उल्लास भरा अचरज है। उसकी आँखों में सन्तोष की परछाइयाँ थी। आँखों में स्नेह का भाव स्थिर था। कमला पोशाके सिल रही है। बाजा मास्टर उसे अपने घर ले आये थे।। कमला ने साफ साफ कह दिया था कि।। "मैं अब नौकरी नहीं करूंगी।। भूखी मर जाऊं पर नहीं····नौकरी करूंगी।"[15]

कमला तो बिल्कुल बदल गई। उसकी हँसी न जाने कहाँ खो गई है। जिन्दगी की इतनी उलझनों में प्यार स्नेह की बातें करती नहीं। हर वक्त एक आग धधकती रहती है। बाजा मास्टर की बस्ती की गली में वक्त बेवक्त सुनाई पड़ता है। कमला उन्हें घर में रोक कर रखती है। और कोठरी में बंद करते सताती है। शिवराज से हमेशा कहती है, "इनके लिए कुछ करो, मुझसे देखा नहीं जाता, कोठरी में बन्द करके सताना पड़ता है····।"[19]

बाजा मास्टर अपने चेहरे पर अभिनेताओं की तरह हाथ फटकार कर कहते हैं, "हबीब साहब मारे गए। हा···हा····हा···उनकी हंसी सुनकर कमला डर जाती है। कमला उन्हें पकड़कर खुद देहरी पर बैठकर रोती है। शिवराज से नहीं देखा जाता कि उसकी आँखों को देखकर बोलता है, "कमला रोओगी···तो मैं सब तहस नहस कर डालूंगा, मेरी तरफ देखो···।"[20] कमला की आँखों में उदास ममता भर जाती है। बहुत बोझ से वह कहता है तुम्हें दुख होता है तो आज ही शादी कर ले, जो होगा तो देखा जायेगा। कमला कहती है, "मुझे गलत समझा करो" कमला शिवराज के कंधे पर सिर रखकर बड़ी सन्तुष्ट रहती थी। अपनी लिखी हुई कविताएँ कमला को दिखाता है। बाजा मास्टर कमला की आँख बचाकर बाहर चले जाते हैं। "लड़ाई···बस्····बम् बम्म्। कभी दार्शनिक हो जाते। तम्बाकू वालों की दुकान पर बैठकर लोगों को समझाते - "सीधी सड़क है एक। पर···हर गली में आदमी घूमता है। जमीन पर थूलकर पहियों की तरह हाथ चलाते हुए छुक छुक करते वे किसी गली में दौड़ जाते हैं, शोर मचाते हैं···।"[21]

कमला इन्तजार करती है। वह कमला को पुकारते लौटते है घर आकर पड़ते हैं। हँसते हैं, रोते हैं। शिवराज़ आश्वासन देता है और कहता है चिन्ता करने की बात नहीं है। उनकी पूरी देखभाल रखूंगा। दस पांच दिन नहीं हमेशा कमला को उनके साथ कर दूंगा अस्पताल से जब वह घर आएगी, तो मैं वही रहूँगा।

डाक बंगला

कमलेश्वरजी का "डाक बंगला" एक सफल उपन्यास है। नारी जीवन की त्रासद और कष्टदायक अनुभूतियों का चित्रण इस उपन्यास में चित्रीत किया गया है। इसमें एक असाधारण नारी इरा के माध्यम से साधारण नारी की नियति और उसके आभ्यंतरिक एवं बाहय संघर्ष को रूपायित किया जा सकता है।

"डाक बंगला" उपन्यास में इरा के माध्यम से नैतिक और सामाजिक मान्यताओं के बीच टकराहट को दिखाया है, जो विश्वसनीयता है उसका प्रामाणिक रूप प्रस्तुत है। यह संघर्ष अथवा द्वंद्व जिन्दगी का अंतिम विकल्प प्रतीत होता है।

कमलेश्वर ने डाक बंगला में जीवन के यथार्थ का चित्रण प्रस्तुत किया है। उपन्यासों में निम्न-मध्यवर्ग का बिखराव और टूटन, आर्थिक विषमताओं का सम्बन्ध है। परंतु "डाक बंगला" में आर्थिक समस्या दूसरी समस्याओं का आधार लेकर उद्घाटित हुई है।

"डाक बंगला" उपन्यास में इरा का स्थान ही प्रमुख रहा है। उनकी विशेषता का सांगोपांग वर्णन इस उपन्यास में है।

कमलेश्वरजी का डाक बंगला एक चरित्र प्रधान उपन्यास है। यह उपन्यास नायिका प्रधान रहा है। इसकी नायिका है इरा।

3· इरा

"डाक बंगला" नायिका प्रधान उपन्यास है। सारी कहानी उसी के ही इर्द गिर्द घूमती रहती है। इरा वास्तव में विधवा थी। उसके पति डाक्टर

थे जिनकी किसी विद्रोही की गोली लग जाने से मौत हो जाती है। तब से वह बेचेन है। उसको जिन्दगी में कभी सुख नहीं मिला। उसने अपने जीवन में चार पुरुषों से प्रेम किया - सोलंकी, बतरा, विमल और डाक्टर चन्द्रमोहन। लेकिन उनमें से किसी एक ने भी उसे अंतिम प्यार नहीं दिया। जिसके लिए वह जिन्दगी भर तड़पती रहती है।

इरा एक खुबसूरत युवती थी। उसने एम॰ए॰ भी किया था। उसके पति की आकस्मिक मृत्यु का भीषण प्रभाव से खामोश हो गई थी। इरा एक ऐसी नारी है, जिसमें सम्मान की भावना है। अवहेलना करने का साहस उनमें नहीं है। प्रकृति का वेश बिल्कुल सच इरा में था। इरा की जीवन-गाथा ऐसी थी। "झूठ" के सिवा और कुछ उसके जीवन में नहीं था। उसकी एक कमजोरी यह है कि आदमी के सिवा उसने किसी से प्यार नहीं किया। इसलिए झूठ भी नहीं बोल सकी।

मम्मी नहीं थी और डेडी आर्मी में थे। वह नौकरानियों के हाथों पली थी। यूनिवर्सिटी में पढ़ रही थी। उसको नाटक अभिनय करने का शौक था। नाटक समारोह के सिलसिले में वह शिमला चली जाती है। उसका एक मित्र था विमल। वह युनिवर्सिटी में उसके साथ था। बचपन से ही इरा सपनों में डूब जाती है कि कोई राजकुमार मुझे सहारा देकर ले जाता था। वैसे ही मैं उसके सहारे चली गई थी। वही विमल ने ही इरा को एक विश्वास दिया था - इरा हम तुम दोनों रंगमंच के लिए समर्पित हैं। लेकिन उसको इस विश्वास से डेडी नहीं समझ पाते हैं। उनके लिए नाटकों में भाग लेना नंगे होकर नाचने गाने में फर्क नहीं था। अपने विश्वास से वह जीती है। उसका पूरा जीवन, घृणा, प्रेम, प्यार से सिमट जाता है।

विमल के साथ जीवन बिताती है। अचानक एक दिन डेडी का ट्रान्सफर हो जाता है। होस्टल में वह रहती थी। मौका मिलते ही विमल के पास चली जाती थी। इम्तहान देकर वह डेडी के पास चली जाती है। तो उनकी लड़ाई हो जाती है। दिल्ली ड्रामा कम्पिटीशन में जाने से डेडी ने रोका था। फिर इरा तो विमल को वचन देकर आयी थी कि हफ्ते बाद में रिहर्सलों के लिए लौट आऊंगी।

आखिर डैडी की मर्जी के खिलाफ वह विमल के पास लौट आती है।

विमल के साथ रहने से डैडी की सम्पर्क सम्बन्ध सब कुछ टूट गया था। विमल ने इरा की नौकरी की तलाश कर दी थी। काम कोई खास नहीं था। सिर्फ टेलिफोन काल्स अटेण्ड करनी है। बतरा के पास नौकरी करती थी। बतरा शराब का शौकीन था।उसकी सज्जनता और निष्कपटता शराब पीने पर उभरती थी। विमल सपनों की बातें बड़ी गम्भीरता के शोर से मजबूत करता है। विश्वास के वे क्षण उसके पास भी कम होते जा रहे थे। वह खुद ही मजबूर था। दिन-ब-दिन उसका मन शंका से भर जाता है। बतरा के प्रति विमल के दिल में शक बढ़ता ही जा रहा था। उसके शक को खत्म करने के लिए बतरा की नौकरी छोड़ देने का इतरा सोच लेती है। मगर भूखे मरने की नौबत उसको सताती है। इरा के पिताजी ने तो दो बच्चे वाली एक खूबसूरत विधवा से शादी कर ली थी।

विमल की उदासी टूटती जा रही थी। विमल इरा को अकेली छोड़कर चला जाती है। "जो और जितने भी थे, पर वे क्षण बहुत कीमती थे - शरीर की प्यार के नहीं, आत्मविश्वास के। हम दोनों अपनी स्थितियों से पूरी तरह परिचित होते हुए,...अपनी कंटीली सीमाओं को समझाते हुए भी...ऐसी योजनाएँ बनाते थे।...जो पूरी होनी मुश्किल नहीं दिखाई देती थी....।"[22]

विमल एक दिन बम्बई चला जाता है। विमल के जाते ही इरा नंगी हो जाती है। बतरा शीला के बारे में इरा को बता देता है। एक दिन शीला और इरा का भी परिचय हो जाता है। शीला इरा को बतरा के नौकरी से हटा देती है। इरा के बतरा के साथ रहना शीला को पसन्द नहीं है। इरा को नौकरी से छुट्टी देने पर वह बहुत उदास होती है। शीला के प्रति इरा के मन में कोई भावना नहीं थी - "जो देखने में सुन्दर लगता है उसके प्रति घृणा या उदासीनता पैदा करने से ही उत्पन्न होती है...यह शायद मेरी अपनी कमजोरी हो...।"[23]

इरा नौकरी छोड़कर अकेली हो गई थी। रात के अँधेरे में रो रही थी। सामान झुंझलाहट में बिखर दिया था। मन में आत्महत्या का सवाल आता है।

हर आदमी को देखकर मन में एक ही सवाल सताता है उससे नाटक करके गले में बाँह डालकर कहूँ में तुम्हे प्यार करती हूँ। उसकी सबसे बड़ी मजबूरी यही थी कि आदमी निकट आने से उसमें सुंदरता की किरण से फूटने लगती हैं। उसका मन जीत लेता था, उसका दुःख हार मानने को मजबूर करता है ..."जब भी मैंने आदमी को अकेले में देखा है मेरा मन उसके लिए करूण हो आया है, क्योंकि हर आदमी जीवन में बहुत दुःखी है। और उसके दुःखों के बदले उसे सिर्फ प्यार ही दे सकती हूँ - मैं हर आदमी से सच्ची तरह बोलने के लिए प्यार करने के लिए मजबूर हूँ।"[24]

इरा अपने हर प्रेमी से यही कहती है कि तुम मेरी जिन्दगी में पहले हो, तुम प्रथम हो। इरा अपनी सहेली दमयन्ती के पास नागपुर चली जाती थी। मगर बतरा ने ही उन्हें रोक लिया था। बतरा ने उन्हें ट्यूटर गिर्जियन की एक जगह पर नौकरी दिलवायी थी। भूखों मरना पसन्द करती, पर वह नौकरी नहीं करती। इरा को आसाम की याद आती है तो डा·चन्द्रमोहन के बारे में उसका मन बताता है। डाक्टर की अकेली बहन शिलांग में थी, इसीलिए उन्होंने डिबरूगढ़ में नौकरी स्वीकार कर ली थी। उसके बच्चों की देखभाल करने का काम इरा करती है। डाक्टर इरा से शादी का प्रस्ताव रखता है तो इरा साफ इन्कार कर देती है। एक दिन शादी को राजी हो जाती है। शिलांग में जाने से उन दोनों ने शादी कर ली। "पागलपन की सीमा छूते हुए वह मुझ पर टूट पड़ा····जैसा में कहूँगा वैसा करोगे तुम। नहीं करोगी तो निकल जाओ। ओर छिपकती की तरह जबान निकालकर वह अपने ओठों पर बार बार फेरता रहा था···"[25]

इरा और डाक्टर के झगड़े होते ही रहते हैं। गलतो के लिए वह इरा को माफी मांगता है। इरा एक दिन नागपुर चली जाती है। नागपुर में कुछ दिनों के बाद डाक्टर की बीमारी का तार आता है। वह फौरन डाक्टर के पास चली जाती है। डाक्टर आखिर एक दिन दम तोड़ देता है। डाक्टर को विद्रोही ने गोली मारने से ही मौत हो जाती है।····"यह ऋण में कभी भी उतार नहीं सकती····और मेरे पास इसका कोई भी जवाब नहीं है जो मैं डाक्टर की आत्मा को दे सकूँ - अब जैसा तुम चाहो। यह प्रश्न हमेशा मुझसे लिपटा रहेगा, क्योंकि आत्मा ने

चटखनी नहीं होती····।"[26]

इरा ने सारी कहानी तिलक को बता दी थी। तिलक शादी का प्रस्ताव जब वह कर लेता है। तो इरा कदापि शादी नहीं करेगी ऐसा जवाब देती है। इरा के जिन्दगी में नये मोड़ आते ही रहते हैं1 किसी कम्पनी में सेल्स गर्ल का काम करना पड़ता है। इरा को एक दिन दमयन्ती का खत मिल जाता है। जिसमें विमल की बीमारी का जिक्र किया था। विमल की बीमारी बढ़ती ही जा रही थी। बेचारे विमल ने एक दिन बिदा ली। इरा अकेली ही रह जाती है। "मेरा शरीर पसीना पसीना हो गया। एक बार उसका भ्रम उसे खा चुका था और अब तो वह पहले से भी अधिक ईर्ष्यालु, जिद्दी और चिड़चिड़ा हो गया था। जब यह सामने आएगा या वह जानेगा तो कैसे बरदाश्त कर पाएगा···रातों में मैं यही सोचती रह जाती थी।"[27]

कमरा गंदा था और सिरहाने एक खिडकी थी। दो कुरसियाँ थी ~~वह~~ कमरे में पड़ी रही थी। एक ओर विमल का बंधा हुआ सामान रखा था। विमल नहीं था, पर उसका सारा सामान इरा ने जतन से बांधकर रख दिया था। कमरा बहुत उदास था। इरा बहुत अकेली हो गयी थी। धीरे से वह बोलती है, "अब कहीं नौकरी कर लूँगी या यह सुटकेस उठाकर कहीं और चली जाऊंगी।"[28]

इरा एक दिन नौकरी के सिलसिले में चण्डिगढ जाती है, तो तिलक उसको बिदा देने के लिए स्टेशन पर चला जाता है। रेल छूटते ही इरा खिड़की पर नहीं आती। तिलक दुःख से प्रेरित होकर चला जाता है। "अब मैं इतना ही जानता हूँ कि या तो इरा ने चण्डिगढ में नौकरी कर ली होगी····या अपना सुटकेस लेकर कहीं और चली गई होगी···कम से कम दिल्ली लौटकर वह नहीं आई है।"[29]

"डाक बंगला" उपन्यास में इरा प्रमुख पात्र है। इरा ने अपनी जिन्दगी में चार लोगों से प्यार किया था। इरा को जिन्दगी में किसीने भी अंतिम प्यार नहीं दिया। इसलिए वह तड़पती रही। और जीवन बीताती रहती है।

तीसरा आदमी

कमलेश्वरजी का "तीसरा आदमी" यह उपन्यास पूरी तरह से सफल है। यह उपन्यास सहज शैली में लिखा गया है। उपन्यास की दूसरी बड़ी विशेषता यह है कि पति-पत्नी के बीच तीसरे आदमी के आने की प्रचलित कहानी को लेखक ने एक सामाजिक और आर्थिक आयाम प्रदान किया है।

"तीसरा आदमी" उपन्यास में जीवन का यथार्थ वर्तमान, मध्यवर्गीय व्यक्ति चेतना को परिवर्तित रूप में उद्घाटित करनेवाला उपन्यास है। कमलेश्वरजी इस उपन्यास में छोटी छोटी स्थितियों का मध्यवर्गीय जीवन की विषमताओं को व्यक्त करने का प्रयास करते हैं।

एक ओर जहाँ स्थितियाँ परिवार में स्नेह और आत्मीयता उत्पन्न करती है। वहाँ दूसरी ओर कटुता भी भर देती है। इस उपन्यास में जीवन्त कटु सत्यों को सूक्ष्म और मार्मिक रूप की अनुभूति का वर्णन किया गया है। इस प्रकार "तीसरा आदमी" महत्त्वपूर्ण उपन्यास है।

चित्रा

"तीसरा आदमी" का एक प्रमुख नारी पात्र है। वह मैं की पत्नी है। चित्रा पढ़ी-लिखी खुबसूरत युवती है। दरअसल वह लखनऊ की रहनेवाली है। चित्रा सुमन्त की खुबसूरती से प्रभावित हो जाती है। अपने पति के साथ चित्रा दिल्ली जाती है। सुमन्त के पास इस छोटे से कमरे में तीनों रहने लगते हैं। मैं की गैरमौजूदगी का दोनो भी फायदा उठाते हैं। चित्रा के बीच एक हल्की-सी छाया मँडराती दिखाई देती है। चित्रा के आने से घर में एक रौनक आती है। माँ जो भी काम अधूरा छोडती, वह चित्रा के ऊपर छोड़कर जाती है। बाबूजी ने काफी आनाकानी के बाद दिल्ली जाना मंजूर कर लिया था, इस शर्त के साथ उन दिनों लोगों के पास वही इलाहाबाद में रहेगी, चित्रा वहाँ अकेले रहना पसन्द नहीं करती।

चित्रा पहली बार जब आती है तो, उसी एक कमरे में तीनों को ठहरना पड़ता है। चित्रा की वजह से होटलों में खाना मुमकीन नहीं था। इसलिए रोज

खिचड़ी या पराठों का भोजन होने लगता है। जब चित्रा को पहले दिन लाया था तो कमरा देखकर वह बहुत उदास हो गयी थी। धीरे धीरे चित्रा की उदासी उड़ती जाती थी। वह उस गन्दे कमरे में काफी खुश रही थी। चित्रा के आने से ही उन दिनों बारिश शुरू हो चुकी थी। बड़ी घनघोर बारिश हुई थी। बड़ी बुरी हालत थी। गली में लेटना मुमकीन नहीं था। इसलिए तीनों ही नीचे जमीन पर गुजारा कर लेते थे।

कमरे और माहोल में दम घुटने लगता है। तीनों ही अजनबियों की तरह पेश आने लगे थे। चित्रा से बात करने में कोई वक्त ही नहीं था। चित्रा भरी आँखों से सुमन्त को देखती है। सुमन्त देखने में बहुत खुबसूरत है। चित्रा उसकी खुबसूरत से प्रभावित हो जाती है। शादी के कुछ दिनों बाद चित्रा सुमन्त की ओर खींच जाती है। मानसिक तनाव बढ़ता ही जाता है। घर में हमेशा एक तीसरी छाया मँडराती रहती है। जब पति-पत्नी के बीच कोई तीसरा आदमी आता है तो उनके रिश्ते टूट जाते हैं। "जैसे वह मेरी पत्नी न होकर जान पहचान की लड़की हो, जो सिर्फ इस शाम भर के लिए मेरे साथ आई हो...।"[30]

चित्रा सुमन्त के साथ बाहर जाने से बेहद उदास हो गयी थी। दोनों एक दुसरे को सामने देख सकने में असमर्थ पा रहे थे। चित्रा खिडकी से चिपकी हुई बराबर बाहर देख रही थी। क्योंकि किसी को संशय आया न हो। चित्रा को नफरत हुई थी। सुमन्त जब चित्रा के आँखों में नजर डालता है तो उनकी आँखों में आग धधकती रहती है। चित्रा कठिनाइयों के साथ गुजरती रहती है। उसके प्रति मन में कुछ बदल रहा था।

"मेरा मन यहाँ नही लगता। "तो कहाँ जाना चाहती हो ?"...जाने के लिए और जगह कहाँ है ?"[31]

मैं अच्छी नोकरी की तलाश में दिल्ली चला जाता है। सुमन्त दिल्ली के प्रेस में काम करता था। सुमन्त ने चित्रा को प्रूफरीडिंग का काम सिखाया है। मैं जब घर से बाहर चला जाता है तो सिर्फ चित्रा और सुमन्त दोनों ही मकान में रहते हैं। सुमन्त चित्रा की ओर आकर्षित होता है और चित्रा सुमन्त की ओर

आकर्षित है। ···"आज भी वक्त था···अकेले होने का···पर मन में कुछ ऐसा भरा हुआ था कि दोनों ही अपने वहाँ होने का कोई वसीला नहीं खोज पा रहे थे लग रहा था कि हम दोनों ही साथ रहने को मजबूर हैं····।"[32]

चित्रा और सुमन्त के बीच जिन सात दिनों सारी बातों का घटित होना यह उपन्यास की शुरूआत है। चित्रा का सुमन्त के साथ रहना, उठना, बैठना यह अच्छा नहीं है। ···"घटनाएँ तो बहुत-सी हैं - हर दिन कई कई घटनाओं का दिन होता था। हर पल मुझे एक संशय खाए रहता था। दिन-ब-दिन अपने असंतुलित होते हुए संबंध और हमारे बीच में निरन्तर भरती हुई खामोशी··।"[33]

उस दिन गहराई का अनुभव किया था कि सचमुच एक तीसरा आदमी हमारे बीच उपस्थित है। हर बात ढलती रहती है। हर संशय का इशारा करता है। पति-पत्नी के सम्बन्धों का आधार दूसरा है, नैसर्गिक कोमल पशुता है। चित्रा के प्रति मैं कही अनुभव ही नहीं करता। सुमन्त के साथ अकेले रह जाना मैं बर्दाश्त नहीं करता। चित्रा पर भी एकात्म का अधिकार नहीं था। झूठा अधिकार की घोषणा करता है और अपने पुरूष को चित्रा सताती रहती है।

प्रेस के काम से मैं को आगरा जाना पड़ता है। इसलिए सुमन्त ने उनकी अनुपस्थिति की निश्चितता महसूस नहीं करती। मैं जाने से ही चित्रा और सुमन्त दोनों ही एक दूसरे के करीब आ गये थे। "तुम्हारा जाना जरूरी है ?" मैं ने अपने मन के चोर को दबाते हुए उपर से कहा था। "मैं भी जा रहा हूँ···चित्रा अकेली रह जाएगी।"[34] सातवें दिन जब चित्रा का पति घर वापस पहुँचा तो संमुत नहीं था। चित्रा कपड़ो पर इस्त्री कर रही थी। सुमन्त बाहर जानेवाला था। चित्रा जवाब देती है कि उनका प्रोग्राम नहीं बना। मैं को बहुत खामोशी से एक पल के लिए माथे पर पसीना छलछला आता है। बेहद अर्थभरी खामोशी छाई जाती थी। मनहूस खामोशी को तोड़ देने के लिए छटपटा रहा था। वैवाहिक अपेक्षाओं की पूर्ति में संलग्न व्यक्ति कितना भद्दा लगता है। ···"और एक दिन जब वह प्याले धोकर लौटी थी तो उसकी कनपटी पर साबुन का झाग लगा हुआ था। उसे शायद उसने पोंछा भी था पर अनजाने ही थोडासा पूछने से रह गया

था।"[35]

चित्रा सुमन्त से गर्भवती रही। सुमन्त चित्रा के कंधे पर हाथ रखते हुए मुक्त भाव से चल रहा था, चित्रा भी हँसती हुई उससे कुछ कह रही थी। हिंस्त्र पशु की तरह मैं चित्रा के साथ पेश आता है। जिन्दगी से निकल जाना चाहता है मगर तीसरा रास्ता तो कोई ही नहीं था। पति के पास दो अधिकार होते हैं - गँवारो की तरह पेश आता है या जानवरों की तरह सब कुछ स्वीकार करते ही टूटी हुई जिन्दगी की तकलीफ झेलते हैं। खुद में ही अपने को छोटा करता है। चित्रा ने कभी कहा ही नहीं था कि वह मैं से प्यार करती है। शादी तो इस बात की गारंटी नहीं है कि पुरूष और नारी प्यार भी करेंगे।

यह रिश्ता तो सिर्फ रहम का होता है। नारी पुरूष पर रहम करके उसकी वासना की तृप्ति प्रदान कर देती है। रहम ही उन दोनों को जोड़े रहता है। जहाँ यह रहम नहीं रह जाता, वहाँ सब कुछ टूट जाता है। चित्रा को बिना बताये मैं भोपाल चला जाता है। क्योंकि मन को सुख मिल जायेगा। चित्रा ने भी यह पूछा नहीं था कि कब लौटकर आओगे। इतना तो कहती थी, "वहाँ मेरे सबसे प्रणाम कह देना। चित्रा में बर्दाश्त करने की अद्भुत क्षमता थी। वह कुछ कहने में या मानने में विश्वास करती नहीं! उसका अहम अजीब था। सुमन्त बहुत घुटा घुटा रहता था।

चित्रा और सुमन्त दोनों ही दिल्ली में रहते थे। इस बीच मैं ने चित्रा को कोई भी खत नहीं लिखा था। घर में इतने दिन चित्रा को छोडकर छुट्टी पर पड़े रहने से तरह तरह की बातें हुई थी। मैं दिल्ली पहुँचकर एक मित्र के घर ठहर जाता है। चित्रा का हाल जानने के लिए सुमन्त को उसके प्रेम में फोन किया था। उसने चित्रा को भाभी न कहकर सीधे नाम से पुकारा था। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों के सम्बन्ध किस स्तर पर पहुँच गये हैं। सुमन्त यह व्यवहार मैं को अच्छा नहीं लगा था। वह सुमन्त को कहता है, "वह आदमी···जिसने मेरी बनती दुनिया में आग लगा दी थी, एक तरह से ···मुझे ही दोषियों के कटघरे में खड़ा कर रहा था···।"[36]

चित्रा का कोई हाल भी मैं जान नहीं पाया था। मैं अपने मन को पराजित महसूस करता था। बूरी तरह से वह टूट भी गया था। शायद चित्रा अपने मायके चली गयी होगी ऐसा मानता है। क्योंकि दिल्ली में प्रसव का इन्तजाम करना सुमन्त के वश की तो बात नहीं थी। कई दिनों बाद चित्रा के पिताजी ने चिठ्ठी भेजी थी और पुत्र होने की भी सूचना दी थी। पुत्र-प्राप्ति कैसी ? और किसलिए ? मैं के लिए वह सब अर्थहीन था। चित्रा के लिए मन में घृणा-सी उपजती थी। मैं अपने को पिता मान ही नहीं पाता। "वह मेरा पुत्र ही है···लेकिन इसके बावजूद कुछ बनता नहीं।"[37]

एक दिन कमजोर क्षणों में मैं ने चित्रा को एक चिठ्ठी लिखी थी। जो कुछ भी हुआ है, उसे भूल जाओ और बच्चे को लेकर यहाँ चली आओ। अपमान और दुःख की आग में जलने से ही कुछ भी शेष नहीं छोडा है। चित्रा को वे कहते हैं मन में घृणा नहीं और कुछ नहीं है। दोनों एक नयी जिन्दगी शुरू करना चाहते थे। साफ मन से वह इतना कहते हैं कि तुम्हारे चले आने से सब ठीक हो जायेगा। मेरे मन में किसी तरह की कुण्ठा नहीं है। प्यार के सिवा और कुछ नहीं कर सकता। पत्र की प्रतिक्षा निरन्तर करता रहता है।

कुछ दिनों बाद उसका तार मिलता है, वह आने की खबर दे रही है। जब वह स्टेशन पर उसे लेने जाता है तो उसे शक होता है, सुमन्त भी पहुँचा हो, पर ऐसा कुछ भी नहीं था। चित्रा ने समझदारी की थी। बच्चे को देखते ही सारा मलाल धुल गया। बहुत ही सुन्दर था - बहुत प्यारा। चित्रा ने उसे बहुत संवार कर रख लिया था। पहली नजर में चित्रा बहुत निष्कलुष लगी थी। उसका शहर पहले से कुछ निखरा और दुर्बल था। "कुछ अजीब तरह का निखार था उसमें··· बच्चे के जनम के बाद उसमें वह उद्दाम खिंचाव नहीं रहा था। उसकी जगह अद्भुत सा सौन्दर्य फूटा था···उसमें शांत, मासूम और पावन-सा आ गये थे।"[38]

चित्रा को लेकर मैं अपने दोस्त के घर आता है। मित्र ने भी चित्रा का खुले दिल से स्वागत किया था और बच्चे को देखकर वह भी बहुत खुश हुआ था। मैं उस वक्त पश्चाताप से भरा बैठा था। गुड्डू की खातिर उन्होंने सब कुछ

बरदाश्त कर लिया था। वह शून्य की ओर देख रही थी। ममता वह उमड़ आयी थी। चटाई पर गुड्डु मुस्करा रहा था - अपने में था। चित्रा उसके कपडे बदलने के लिए मुड़ी थी। "उसके अंग प्रत्यंग को अपनी स्मृति में बसाने के लिए मुझे एक बार फिर पहचान करनी होगी···वही आत्मीय पहचान···जिसकी हमेशा मुझे तलाश थी···।"[39]

चित्रा के पूरे शरीर और व्यक्तित्व ने एक संस्कार दे दिया था। चित्रा के लहजे में कुछ बदलाव था। उसके हँसने में एक तीसरी ध्वनि फूटती थी। तीसरा आदमी दिन-ब-दिन हमारी जिन्दगी में धंसता चला आ रहा था। चित्रा के पूरे व्यक्तित्व से हमेशा कुछ कुछ वैसे ही छायाभास से फूटते नजर आते थे। चित्रा अपनी चितवनों, मुस्कराहटों का अछूतापन सोख लेती थी। चित्रा में ज्वार उठा करते थे - वह हँसती तो खूब हंसती। वह अपनत्व की बात करती तो लगता है कि उसमें वह क्वांरापन सहज ही बांध लेता है। मानसिक स्थिति से वह असह्य होती जा रही थी। चित्रा घुटी घुटी-सी रहने लगी थी। "जिन्दगी के नये अर्थों तक पहुँचे बिना जिन्दगी का मौजूदा लिपट गया था।"[40]

पारिवारिक जिन्दगी एक ढर्रा बन गया था। केवल वर्तमान ही ऐसा है।। जिसका कोई मसरफ नहीं दिखाई देता। नौकरी ही ऐसी है, जो आदमी को बेकार कर देती है। वह किसी लायक नहीं रह जाता। चित्रा का पति बेकार घर में बैठता है तो वह उसको कहती है छोटा-मोटा काम कर ले। चित्रा भीतर ही भीतर जैसे मरती जा रही थी। काफी दिनों तक उसने अपनी भीतर की प्राणशक्ति को चलाया और उसके बल पर स्वयं को जीवित रखने की कोशिश की है। उसकी आँखों की चमक बुझती जा रही थी। अंगों की आभा मिटती जा रही थी। उसके पास कोई करिश्मा नहीं था। "वही कमरा···दीवारें···अलमारियाँ····बर्तन और वक्त। सड़क का वही मोड़····तार के खंभे, दूधवाले की आवाज और थकान। जाते हुए लौटते हुए कदमों की वही वर्षों से चली आती आहट, वही बूथ, वही माइक, वही घोषणाएँ, वही आवाज····और कुछ नहीं····कुछभी नही।"[41]

गुड्डू कुछ बीमार पड़ा था। वह बीमारी भी आदत बन गई थी। चित्रा फिर गर्भवती थी - पहले सही और भी ज्यादा श्लथ और थकी हुई थी। बीमारी बढ़ती ही जाती है। गुड्डू को "डिप्थीरिया" की बीमारी हुई थी। गुड्डू को अस्पताल में भरती करना पड़ता है। चित्रा देखभाल के लिए रुक गयी थी। गुड्डू की हालत में कोई सुधार नहीं हुआ था। चित्रा की आँखों में धूल-सी उड़ती दिखाई देती है। चित्रा चुपचाप बैठी रही थी। वक्त बहुत नाजूक था। डाक्टर की राय जानकर सुमन्त आता है। डाक्टर तो वहाँ कुछ बोलते ही नहीं। चित्रा छटपटाती सुमन्त के पास चली जाती है क्योंकि उसके आँखों में अनिश्चय के अलावा और कुछ था ही नहीं ऐसा वह मानती है।

आठवे दिन से बच्चे को लेकर चित्रा घर आती है। चित्रा और मैं दोनों करीब आते हैं। सुमन्त की कोशिशों से चित्रा को एक छोटी-सी नौकरी मिल गयी थी। वह एक हायर सेकण्डरी स्कूल में किसी लीव वैकेन्सी में पढ़ाने लगी थी। सुमन्त एक तीसरी जगह कमरा ले लिया था। और जिधर चित्रा ने एक लडकी को जन्म दिया था। प्रसव का सारा इन्तजाम सुमन्त ने किया था। चित्रा पूरी तरह से टूट चुकी थी। मैं की ट्रान्सफर पटना से करा दिया है। चित्रा दिल्ली छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। आखिर मैं ने दिल्ली छोड़ ही दी और वह पटना चला जाता है।

चित्रा बड़ी ही निष्कलुष-सी दिखाई देती थी। उसका शरीर कुछ और निखर गया था। कुछ सौन्दर्य फूट रहा था। पहले से वह अधिक अश्वस्त लगी थी। उसकी आँखों से चिनगारियाँ फूट रही थी। बच्ची जाग गई थी। तो उसे उठाकर रसोई में चली जाती है। रसोई की चिटखनी बन्द करके भीतर से कैदी हो गयी थी सुमन्त लौटकर नहीं आता।

चित्रा को कोई खबर नहीं थी। उसने कोई खत भी नहीं लिखा था। किसी होटल के कमरे में जाकर सुमन्त आत्महत्या कर लेता है। शायद किसी तीसरे आदमी के कारण - शायद वह मैं। चित्रा के दिल में वही पुरानी भावनाएँ उभर आती हैं। वह हारी हुई है। अब बाकी ही क्या रहा है ? बच्चे ? वक्त से एक तीसरी छाया मँडराती रहती है। चित्रा को कस रही है। "और अब चित्रा मैं के

साथ उस तरह रह भी नहीं सकता···यह मेरी मजबूरी है। मुझे उस छाया ने मजबूरी कर रखा है। अब मेरी दुनिया में मैं हूँ और एक छाया वह है, जो मुझे अब चैन से नहीं बैठने देती।"[42]

आगामी अतीत

कमलेश्वरजी का महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। यह उपन्यास धर्मयुग में छपा था। इस उपन्यास पर आधारित गुलजार के निर्देशन में "मौसम" शीर्षक से फिल्म बनी है। यह उपन्यास अत्यन्त लोकप्रिय उपन्यास है। इस उपन्यास में चंदा और चांदनी प्रमुख नारी पात्र हैं।

चंदा

चंदा दिलबहादुर वैद्य की बेटी थी। जंगल में जाकर जड़ी-बूटियों बीनने का काम करती थी। चंदा की माँ राजलक्ष्या की शिकार हो जाती है। वैद्यजी अपनी इस कहानी से दुनिया डूबे हुए थे। दार्जिलिंग के जंगल में कमलबोस और चंदा की मुलाकात होती है। वे उससे विवाह करने का वादा करके वापस चले जाते हैं। कमलबोस से वह सवाल करती है कि परीक्षा देकर लौट आना। लेकिन परीक्षा न दो, तो यह गलत होगा।

चंदा ने उसे बहुत प्यार से समझा लिया था। कमजोरी बहुत व्यापती है। ···"देखो मैं जानती हूँ···तुम लौटकर जरूर आओगे। किस दिन आओगे, यह तुम पर है···। यह रात साक्षी है, इस बात की कि इस रात में पास होते हुए भी हम मिले नहीं है···इस मिलन के लिए अब हर रात जागती रहेगी।"[43] चंदा की आँखे डबडबाती हैं। कमलबोस परीक्षाओं के बाद हाउस सर्जन का कोर्स करके आनेवाले थे।

कमलबोस डाक्टरी पास करके जब चंदा के गाँव दार्जिलिंग आते हैं, तो उनको यह मालूम हो जाता है कि "दिलबहादुर थापा का धनवंतरि औषधालय यहाँ नहीं है। देवदार का वही पेड़ खड़ा है। लेकिन वहाँ मकान था, न वह बोर्ड था । हर आदमी को वह पूछते हैं। वैद्यजी हकीमजी उनका औषधालय यही

था, सभी लोग उनको एक ही जवाब देते हैं। यहाँ तो कोई वैद्य हकीम नहीं रहता। कोई दूसरी जगह होगी। हमेशा से सभी लोग यह बात टाल देते हैं। कमलबोस पता लगाता है, वैद्यजी बीस-बाईस बरस पहले स्वर्ग सिधारे थे। उनकी जवान लड़की थी चंदा।

चंदा ने बुढ़ापा बिगाड़ दिया था। डाक्टर का इन्तजार करते करते चन्दा तीन साल तक रूक जाती है। चंदा बहुत ही जिद्दी लड़की है। किसी की भी बात नहीं सुनती थी। वैद्यजी का बुढ़ापा खराब हो गया था। उनकी बहुत बदनामी होती है। आर्थिक दृष्टया वह बहुत कमजोर हुई थी। बिरादरी ने हुक्का-पानी बंद कर दिया था। उनकी तबीयत भी खराब होने लगती थी। जब बहुत तबीयत बिगड़ती जाती है, तो चंदा को होश आता है। उन पर अफवाहों फैलाने लगती है। कोई उससे शादी करने के लिए तैयार नहीं है। वैद्य की लडकी डाक्टरनी लोग उसे डाक्टरनी कह के चिढ़ाने लगते थे। डाक्टरनी जा रही है ऐसा वे कहते हैं।

चंदा ने एक लँगडे हरकारे से शादी कर ली थी। आखिर किसी का घर तो बसना ही था। जंगल का हरकारा था उसका पति, उसकी उम्र से काफी बड़ा था। उसे ही औरत चाहिए थी। शादी के बाद ही वैद्यजी का देहान्त हो गया चार साल बाद उसको एक लड़की हुई थी। आपस में दोनों झगडते रहते थे। उसका पति दस-दस पंद्रह दिनों के लिये जंगल में गश्त पर चला जाता है। एक बार जाता है तो लौटता नहीं। किसी मुसाफिर ने खबर दी कि उत्तरवाले जंगल में हरचरन हारकारे को जंगली जानवर ने मार डाला है।···"ऐसी पत्थर दिल औरत कि अपने आदमी की लाश तक के लिए जंगल में नहीं गयी। आदमी तो···फिर भी आदमी है···साहेब····।"[44]

चंदा बहुत जिद्दी औरत थी। हरचरन की मौत के बाद सात आठ महीने वह यहाँ रही थी। आमदनी का कोई जरिया नहीं था। कोई उसको साथ नहीं देता था। आखिर काम धाम की तलाश में वह यह जगह छोडकर नीली घाटी चली जाती है। वैद्यजी को बहुत बुरे दिन आये थे। चंदा ने तो अपने आप अपनी

जिन्दगी खराब की थी। उसका जो हाल हो गया था वह देखकर मन को दुख देता है। उसका पति जब मर जाता है। उसके बाद तो खाने-पीने की भी मुसीबत आ गयी थी। अपने घर उन दिनों सात-आठ बकरियाँ थी।

चंदा की बच्ची बहुत प्यारी थी। कमलबोस का पूरा शरीर झनझना उठता है।..."आपसे फिर मिलूँगा...एक और हमारे दोस्त थे जहाँ दुर्गा श्रेष्ठ... जंगलों के ठेकेदार...।"[45] कमलबोस को चन्दा से शादी न करने से पछतावा हो जाता है। वे बहुत दुःखी हो गये थे। उनके मन एक ही सवाल करता है कि चंदा का क्या होगा ? उनका अपराध भाव और बढ़ गया था। चंदा बिल्कुल बेसहारा होकर कहीं चली गयी है। वहाँ होती तो मुलाकात हो जाती थी। वह उन्हें लौटकर आये यह देखते ही माफ कर देती थी। उनके शेष दिन उन्हें चैन से गुजर जाते हैं। "यह तो महायात्रा है जिस पर आदमी अकेला जाता है...औरों ने क्या किया...इससे ज्यादा यह सोचता हुआ कि खुद उसने औरों के साथ क्या किया...।"[46]

डाक्टर कमलबोस को दार्जिलिंग में रहने का कोई अर्थ नजर नहीं आता है। उसकी सारी खुबसूरती अब रंगहीन हो चुकी है। उन्हें हर तरफ एक थापा वैधजी का चेहरा नजर आता है। जो कभी निरीह हो जाते हैं, तो कभी गुस्से से लाल हो जाते थे। दूसरा चेहरा था चंदा का, जो कभी बहुत शांत हो जाता है और कभी बहुत तरल सभी पीड़ाओं को पीता हुआ चेहरा। दोनों चेहरों की व्याकुलता से अकुला कर कमलबोस ने यह तय किया है कि वह चंदा की खोज में जाते हैं।

"नहीं, कोई बात नहीं है यंगमैन, बस जिस राहत की तलाश में मैं यहाँ आया था, लगतसा है...उसका सिर कहीं और है"[47]

कमलबोस होटल का बिल चुका कर मैनेजर से विदा लेते हैं और नीली घाटी की तरफ चले जाते हैं। रास्ते में उनका मन उलझ रहा था। सब घटनाओं उनके मन को सताती रहती हैं। करघा घर से वह पहुँच जाते हैं। तो उनको पता चलता है कि चंदा बहुत पहले यहाँ सूत रंगाने का काम करती थी। करघा

से चली जाती थी। ठीक, वह दार्जिलिंग की ही थी। उसके साथ एक लड़की भी थी छोटी-सी। कमलबोस के उत्साह पर पानी पड़ गया था। चंदा को आमदनी का कोई जरिया नहीं था इसलिए वह यहाँ से धोलपुर चली जाती है। "क्या पता साब ?...दो चार बरस की बात होती...तो शायद कुछ मालूम भी होता...अब कोन क्या कह सकता है...।"[48]

चंदा की तलाश में हताश होकर कमलबोस डाक बंगले लौट जाते हैं। चौकीदार को वह धोलपुर का रास्ता पूछते रहते हैं। धोलपुर कमलबोस मुश्किल में पड़ जाते हैं। यह तो काफी बड़ी बस्ती थी। बारह बरस पहले चंदा यहाँ आयी थी इसी रास्ते से आयी होगी। इसी बीच के अड्डे पर अपनी बच्ची को लेकर उतरी होगी ऐसी बाते कमलबोस मन में सोचते रहते हैं।

कमलबोस को पंडितजी सब कुछ बता देता है एक बच्ची हमारी पाठशाला में पढ़ने आती थी। उसकी उम्र रही होगी सात-आठ बरस। उसका नाम शायद चाँदनी ही था। चाँदनी था, कमलबोस ने दुबारा पूछ लिया। उसका बाप नहीं था। उसकी माँ फीस देने को आती थी। तीन बरस बाद बच्ची ने पाठशाला आना बन्द कर लिया था। चन्दा डाक्टरनी यहाँ दस बरस पहले नीली घाट से आयी थी। जड़ी-बूटियों से इलाज करती रही थी। उसको एक लड़की थी। अभी पाँच बरस पहले बस्ती में रही थी। मकान मालिक से चौकीदार बात करता तो वह बहुत जोश से बताने लगता है - "उन जैसी औरत होनी मुश्किल है - बाबू। साक्षात देवी थी...यहाँ इसी, कोठरी में रहती थी, नियम से किराया देती थी... गरीबों को दवादारू मुफ्त देती थी...वैदक उसे अच्छी तरह आती थी....।"[49]

कमलबोस चंदा को ढूँढते ढूँढते ही परेशान होते हैं। चंदा की तो पिछले साल मौत हो गयी थी। मौत से दो ढाई साल पहले उसका दिमाग चला था। भूत परेतों ने उसके दिमाग पर डेरा डाल लिया था। उसकी बेटी चाँदनी ब्याह के लायक हो जाती थी, पर जिस पर भूत परेत का आसेब हो जाता है, उसकी लड़की से कोई भी ब्याह करने तैयार नहीं था। इसीलिए वह दार्जिलिंग भाग जाती है।

डाक्टर का मन पश्चाताप से भरा हुआ था। एक बरस पहले भी आ गये होते तो कम से कम चंदा को देख लेते। अब चारों तरफ महाशून्य ही था। एक विराट में वह बंद रहे थे। उनका पूरा शरीर चकनाचूर हो गया था। मन बेतरह पस्त था। दूसरे दिन दोपहर को कमलबोस दार्जिलिंग चले जाते हैं। थका हुआ बेसहारा मन बेतरह उखड़ गया था।···"मौत हो गयी ओह। कोई मरद है घर पर जिनसे कुछ बाते मालूम हो सके···देखिए, मैं बहुत दूर से उन्हें खोजता आया हूँ। आप कुछ और मदद कर सकें तो बडी मेहरबानी होगी।"[50]

2· चांदनी

चांदनी "आगामी अतीत" का सबसे महत्त्वपूर्ण पात्र है। वास्तव में चांदनी और कोई न होकर चंदा की ही बेटी है। चांदनी एक वेश्याहै। वह वेश्या बन जाती है। कमलबोस चंदा के पास लौट आते है तो बहुत व्याकुल थे। वक्त ने ही सब कुछ कर दिया था चंदा की बेटी से मिलने का सुख उन्हें अवसाद में बदल चुका था। उन्हें लगता है कि चंदा से उनकी शादी हो गयी तो यही लड़की चांदनी उनकी अपनी बेटी होती···"शायद ····कही कही···वे ही दोषी तो नहीं हैं इस सब के लिए····चंदा का इन्तजार करता चेहरा रह-रहकर उने सामने कौंधने लगा था···।"[51] कमलबोस बहुत मुश्किल में फँस जाते हैं।

यही लड़की चंदा की चान्दनी है। वे फिर पता करने के लिए फूलवाले के पास पहुँच जाते हैं। यह कोठा चंपाबाई का भी है और चांदनी बाई का भी है। उन्होंने तय कर लिया था वे चांदनी से पूरी बाते जाने बगैर नहीं जायेंगे। चांदनी को लेकर उनका मन कुछ लहराया जाता है। अपने मन को वह टटोल रहे थे। सजावट के लिए "क्या" "कैसे" और "क्यों" के सवाल उठ रहे हैं। यह व्यर्थता सामने खड़ी हो जाती है। उनका अहं भाव तृप्त हो जाता है। "कमलबोस···जो ···था और "कमलबोस" जो है मैं। भावनाओं और पश्चाताप के रंग क्या अंतर आ गया है···"जो था", "जो हैं" के एहसासों में। शायद जो था - जब वह दुखी होता तो दुख से प्राप्त सुख के बाद भी उसे गहनतम एहसास दुख का ही होता है।"[52]

संशयों से उबरकर वे चांदनी के कोठे पर पहुँच ही जाते हैं। अंतिम रूप से तो नहीं उबर पाते और अपने को अलग टुकड़ो में बाँट देते हैं, यही तो आसान था। कमलबोस कोठे पर पहुँच जाते हैं। तो उन्हें देखते ही चांदनी भड़क गयी थी। फिर आ गया धंधा खराब करने। इधर चक्कर काटने से क्या फायदा होगा। मेरी बात सुनो बेटी ऐसा कहकर उसकी शंका दूर करते रहते हैं। अरे यहाँ बेटियाँ नहीं, बीवियाँ मिलती हैं, "घंटे भर की बीवियाँ···वह बिगडी थी··जा जा शिलाजीत खा के पहले हौसला पैदा कर समझा बुड्ढे।"[53]

चांदनी ने कमलबोस से कहा अच्छा तुम चले जाता है कि नहीं। और इससे पहले कि चंपा ठुमकती हुई बाहर निकल कर आये कमलबोस बेहद अपमानित हो जाते है। चंपा और चांदनी की मिली जुली बौछार थी। अब उन्होंने मजबूत वादा कर लिया था कि वे चांदनी से जरूर मिलेंगे और उन्हें सब कुछ मालूम करके ही रहेंगे। उन्होंने आँखे बंद की तो सामने चंदा खडी हो जाती है और बोली थी "देखो कमल, जो कुछ मेरे वश में था उतना तो मैंने किया···जो मेरे वश में नहीं था उसने क्या किया, वह सब अब तुम्हारे सामने हैं। तुम्ही देखो····कितनी बेबस हो गयी थि मैं···।"[54]

कमलबोस पक्के इरादे से चांदनी के कोठे की तरफ चले जाते हैं। कमलबोस को नीचे खड़े देखते ही चांदनी तकलीफ सी हो जाती है। चांदनी को उनका आना जाना पसन्द नहीं है। फिर अपने निश्चय के बल पर उन्होंने कदम रखा था। चांदनी ने उसे गहराई से द्रेखा रखेल की तरह वह कितने महीने का सौदा करती है। जिन्दगी भर रखूँगा ऐसा वह वादा करते हैं। बीवी बन के जिन्दगी भर रहना नहीं चाहती है। कमलबोस की हालत नाजूक हो गयी थी। चांदनी की अम्माकहती थी··· "ईमानदार लोग हमेशा गरीब रहते हैं। गरीबी इस बात का सबूत है कि हम ईमानदार हैं····।"[55]

कमलबोस चांदनी को गंदे माहौल से बाहर निकलना चाहते थे। वह अपनी बेटी समझकर पालना चाहते थे। चंदा यह तेरी बेटी है। तुझ से ही यह

बेटी मेरी हो सकती थी ऐसा वे कहते हैं। चांदनी एक दिन कमलबोस के सामने भयानक संकट का वर्णन करती है। चन्दा कमलबोस का इंतजार करते करते थक जाती है। पच्चीस बरस योंही बीत जाते हैं। उनकी याद करते करते वह पागल हो जाती है। उन्हें अपना होश नहीं रहा था। जब तब यही पूछती रही थी। "इम्तहान हो गये ? तुमने डाक्टरी पास कर ली···।"[56]

चंदा की छोटे से पागलखाने में मौत हो जाती है।शाम को खबर मिल जाती है चांदनी जब कोठरी में जाती है तब उसकी लाश चादर में ढकी रखी थी। क्रिया करम के लिए कोई भी नहीं आया था। वह फूट फूट कर रोने लगी थी। चांदनी ने पलट कर कमलबोस को देखा था तो उसकी आँखों में आँसू भरे थे। कमलबोस चांदनी को सीधे रास्तें पर लाने की बहुत कोशिश करते रहते हैं। "धंधा करूंगी तो पैसा लूँगी····यू मामूली काम नहीं है बाबू बहुत पिता मारकर अनजाने··· आदमी को सहना होता है····तुम औरत होते तो समझ पाते····।"[57]

कमलबोस जब कलकत्ता जाने से तैयार हो जाते हैं। तो चांदनी सहमी हुई थी। हाथ में एक तस्वीर छुपाती हुई खडी है। यह तुम्हारी ही तस्वीर है। यह तस्वीर चंदा ने ही अपने पास छिपा ली थी। चांदनी की निगाहों में सन्नाटा था वह जैसे कुछ नहीं समझ पायी थी। पर फिर एकाएक बोली थी "अब··· इसमें क्या रखा है····ओ माँ····।"[58]

कमलबोस अकेले ही चल पड़े थे। वह पुरानी मुड़ी तुड़ी तस्वीर उन्होने सीट पर रख दी थी। चांदनी ने भी उनकी वह तस्वीर नहीं माँगी थी। कमलबोस को सब याद आता है। चंदा की याद में वे खोये हुए थे। कमलबोस बिल्कुल बेबस होकर चले जाते है। चांदनी ने जब उनको साथ दी थी तो उनके आँखे राहत की साँस ले सकी। उसके जीवन में कोई अर्थ रह गया नहीं था, सहज साहस भी शेष नहीं था। घुटती साँस से छुटकारा पाने के लिए वे सड़क के किनारे पत्थर की तरह बैठते हैं। चांदनी ने जल्दी वह आखिरी फैसला कर लिया था वह कमलबोस के साथ जाना उसे पसंद नहीं है। कमलबोस निराश होकर खाली हाथ वापस चले जाते हैं।

लौटे हुए मुसाफिर

"लौटे हुए मुसाफिर" कमलेश्वरजी का विभाजन की समस्या लेकर लिखा गया श्रेष्ठ उपन्यास है। इस उपन्यास की कहानी एक छोटीसी बस्ती की कहानी है। "चिकवों की बस्ती" की कहानी है। चिकवों की बस्ती का वर्णन इसमें है। "लौटे हुए मुसाफिर" के प्रारम्भिक पृष्ठों में 1857 की बस्ती का निर्देश किया गया है। सिर्फ नफरत की आग ने ही इस बस्ती को जलाया था इसका वर्णन है। इस उपन्यास नारी के रूप में नसीबन और सलमा आती है।

नसीबन

"चिकवों की बस्ती" में ही नसीबन रहती थी। नफरत की आग की चिनगारियाँ बाहर निकालती हैं। नसीबन बहुत संवेदनशील है। वह लोगों की भलाई के लिए कामना करती है। वह मानवीय दृष्टि की सहज मूर्ति है। प्रगति और आपसी प्रेम में ही उसे जीवन के अंकुर दिखाते हैं1

नसीबन की आँखो के सामने सब दृश्य नाच रहे थे। वहाँ वह बच्चों को खोजने जाती थी। जो रेल को देखने के लिए जाते थे, बडा ही गुलगपाडा मचाते हैं। मुसाफिरों को मुँह बिराते ढेले फेंकते हैं। उसको एक नयी जिन्दगी की झलक मिल रही थी "लेकिन जब तक अपने कहे जानेवाले अपने पास न हो, कई जिन्दगी भी बहुत पुरानी और बोझिल लगती हैं। वही बोझसा था नसीबन के दिल पर ...।"[59]

नसीबन की आँखे गहरी हो रही थी। बिजली और नई नई मशीनों के साथ वह जिन्दगी से लौटती है। जिन्दगी का उसे भय था, गरीबी और मस्ती जिन्दगी कैसी होगी ? नयी जिन्दगी कैसी होगी ? नसीबन एक छुटा हुआ किनारा है। उसका मन उदास हो जाता है। जब साईं ने कहा था, "इतने बरस हो गये, इधर कोई नहीं आया..अब बच्चन भी क्या आयेगा। सब वीरान हो गया, सब उज़ड गया....।"[60]

बच्चन का नाम सुनते ही नसीबन की यादें मन में घुलमिल उमड़

रही थी। नसीबन को गुस्सा आता है। साई से कुछ भी कहती नही है। उस रोशनी में आदमियों की काली छायाएँ घूम रही थी। नसीबन निगाहे हटा देती है। वही वीरान सडक पर सात-आठ छायाएँ घूमती रहती है वह नसीबन देख रही थी। बस्ती में कौन आयेगा ? यह बस्ती पर कौन आयेगा अपने ही रास्ते चले जायेंगे।

सन सैतालिस मे पाकिस्तान बनने पर चिकवों की बस्ती अपने आप उज़ड जाती है। नसीबन साई को गहरी नजर से देखती है। जैसे वह सब जानती है कि यहाँ आकर वह कौनसा काम शुरू करता होगा। नसीबन ने हैरत से सलमा को देख लिया। सलमा साफ बयानी साई की बेइज्जती से नसीबन के भीतर बेहद खुश हो गयी थी। साई हताश से अपनी बेइज्जती कबूल नहीं कर पाता। वातावरण के भारीपन को चीरती हुई नसीबन की आवाज सुन रहा था। जब नसीबन साई को देखती है तो उसे लगता है। साई बडा नासमझ है। सतार ने नसीबन को प्यार से पूछ लिया था। "कुछ भी नहीं बस, यूं ही मन ही नहीं लगता। समझ में नहीं आता कहाँचला जाऊँ ? यह बस्ती छोडकर कहाँ किनारा लूँ...।"[61]

नसीबन ने पैनी नजर से सलमा को देख लिया। नसीबन मुसलमान है। बच्चन हिन्दू है। मगर बच्चन के प्रति उसके दिल में जो प्यार की गहराई है। लोग इस नसीबन और बच्चन के प्रेम को गलत समझ बैठते हैं। जिस बेबा की ओर खुलेपन से नसीबन ने बच्चन नाम लिया था। वह सुनकर सतार अचंबित हो जाता है। मुसलमानों को मारने के लिए हिन्दू बडी तैयारियाँ करते हैं। यासीन सलमा को लेकर नसीबन के घर पहुँचता है। घर में सन्नाटा छाया हुआ था। नसीबन के लड़के खेलने बाहर गये थे। नसीबन बच्चन के घर चली जाती है। सन्नाटे की आवाज सुनाई पड़ रही थी।

बस्ती में खामोश छाया जाता है। असमंजस और संदेहों का शहर टूट जा रहा था। लड़ाई की खबर सुनने में सभी दिलचस्पी रहे थे। कदम कदम पर खुशी के गीत गाये जाते थे। नसीबन सतार के साथ भीतर चली जाती है। नसीबन एक ढिबरी जलाती है और अंगीठी जलाकर उसमे तेल गरम करा देती है।

नसीबन, बच्चन और सलमा रमुआ को अस्पताल लेकर पहुँच जाते हैं। सतार छुपे खामोशी से पहुँच जाता है। नसीवन बच्चन को शहर से दूध लाने के लिए भेज देती है और वही खुद अस्पताल में रुकी थी। रातभर नसीबन वही रमुआ के पास बैठती है। बच्चन उनको सोने के लिए कहता है पर वह हट नहीं जाती। रमुआ की टाँग टूटी हुई थी। नसीबन बहुत चिंतीत थी। बस्ती की झनक उनके कानों में गूँज रही थी। पर वह निर्लिप्त हो गयी थी। "मजाक नहीं था उन लोगों को देश निकाला देना···वे ढिल्लन, सहगल हिन्दुत्व की गरिमा का इतिहास फिर जाग रहा था। चारों तरफ उत्तेजना व्याप्त थी। बच्चन को फिलहाल गिरफ्तार करके थाने में बंद कर दिया था। नसीबन परेशान रही थी। बच्चन का पता उसको मालूम नहीं था। रात को वह लौटा ही नहीं था। "मुझे जब पता ही नहीं है तो क्या बताऊं मर्जी मुझे गिरफ्तार करने की हो तो कर लीजिए और मैं क्या कहूँ····"।[62]

बच्चन के बच्चे अकेले घर में खामोश बैठ रहे थे। भूख के मारे लड़के का बुरा हाल हो रहा है। नसीबन उनको खाना खिलाने आती है तो दोनों रो पड़े थे। नसीबन चिंता से भयभीत होती है। इन बच्चों का क्या करूं समझ में कुछ नही आता है। नसीबन को बच्चन का पता है तो वह बच्चन के पास चली जाती। मगर बच्चन चोरी के इल्जाम में गिरफ्तार हो जाता है।चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा छाया हुआ था। बच्चन वापस घर आता है। तो सतार उनको बताता है तुम यहाँ से भाग जाओ यही ठीक है।

नसीबन भी यही सोचती है यही कह रही थी। बच्चों की फिक्र मत करो। बच्चों का खयाल करना "खुदा हाफिज" सतार ने कहा था। घर की तरफ जब वह लौट रहे तो उसे खुशी हो रही थी पर वह खुशी से धीरे धीरे गायब हो गये। अपनी परेशानियों में वह उलझ रहे थे। आखिर यह कब तक चलेगा नसीबन को देखते रहते हैं। उसके सब नक्श, कानों में पड़ी बालियाँ, चेहरे की झुर्रियाँ, हाथों की अंगुलियों के काले और टूटे हुए नाखून, गर्दन के पास उभरी हुई नसें, जीवित होने का भ्रम पूरा शरीर जैसे सब कुछ उसके लिए एकदम नया ही था। उस काया से वह नसीबन नजर नहीं आती है।

बच्चन के दोनों बच्चे नसीबन के यहाँ थे। वह वक्त बेवक्त बच्चों को देखकर चला आता है तो उसी वकत उसे गिरफ्तार किया जा सकता है उसके सामने कोई रास्ता नहीं है। नसीबन के घर कोई नजर रख डालेगा। तो पुलिस का आदमी तो सनक जायेंगे। साई नसीबन के घर चला जाता है। नसीबन के हाथ में आटा था। साई को देखकर उसकी भौहों पर बल पड़ जाते थे। बहुत अपनेपन से नसीबन को वह बोला, अरे इस वक्त भी खाना बना रही हो नसीवन।

डाक बंगले के चारों तरफ पुलिस रूख गये थे। तब से नसीबन अपने आप को सब कुछ संभालकर चुप बैठी थी। उस वक्त बच्चन को बड़ा सहारा मिला था। बस्ती में जब फुसफसाहट शुरू हुई थी तो बच्चन ने पूरी आँखे खोल कर उन्हें देख लिया था। "शायदा कहीं पर···शायद कुछ···पर दूसरे ही पल उसे अपने पर गुस्सा आया था और मन उचाट हो गया था····।[63]

नसीबन के बायें हाथ की बीचवाली अंगुली का टूटा हुआ नाखून उनको बार बार कुछ याद दिलाता था। जब उनकी माँ मरी थी और उस पर कपड़ा डाल दिया जाता है तो बायाँ हाथ भूल से बाहर रह जाता है। आँसू भरी आँखों के पार से उसकी नजर बार बार उसी नाखून पर अटक जाती थी। मन उदास हो जाता है। उस रात जब उसे बच्चों को छोडकर भागना पडता है सतार नसीबन को लेकर जो जो और जिस जिस तरह की बातें उसने सुनी थी उनसे उसकी परेशानी और बढ़ जाती है। नसीबन चार बच्चों की परवरिश करती रहती है। नसीबन का विश्वास देखकर सतार का दिल डूब जाता है। पता चलता है कि अनाथ हिन्दू बच्चों का धर्म परिवर्तन करनेवाली नसीबन है। बाप की मौत हो जाने पर उन दोनों बच्चों को मुसलमान बना रहे हैं। यह जुर्म होगा। पुलिस कह रहे थे।

चिकवों की बस्ती में यासीन जशन मनाता है। आखिर कायदे आजम की जीत होती है। नसीबन सतार को मशवरा करती है। बच्चन आकर अपने लड़को को ले जायेगा··"वह यहाँ नही आएगा···वही बम्बे के किनारे उसने मिलने को कहा है··।"[64] नसीबन मुर्गीयों के दरबे में बंद करके बच्चों को कह रही थी। उसकी आँखों में ममता थी उन बच्चों को उसने दी थी। नसीबन मस्जिद की सीढ़ियों

पर बैठकर उन वीरान मकान को देख रही थी जिनके वाशिन्दे चले गये थे। आसमान एकदम उदास रहा था और चारों तरफ सन्नाटा हुआ था। नफरत की आग भड़क रही थी।

नये निजाम में नयी बाते भी हो रही थी। नसीबन और साई वहाँ थे। नसीबन जाती भी कहाँ ? कभी साई नसीबन के पास आ बैठता है। पुरानी बाते छिड जाती है। अब साई भी दुखी हो जाता है। नसीबन के पास कोई नहीं आता है। नसीबन हुँकार कहती है। सब लोग चले गये नयी सड़क बनी है। बस्ती वीरान हुई है। "अब तो मन बहुत भटकना है···अब तू तो नहीं···चली जायेगी कही···यह धरती भी····।"[65]

गरीबों को कोई पाकिस्तान नहीं ले जाता है। अकेली नसीबन वही सब सोचती रहती है। चुपचाप बैठ जाती है। नसीबन घुटी घुटी सोच रही थी। बिजली और मशिनों के साथ जिन्दगी कैसी बीत जायेगी ? यह नयी जिन्दगी कैसी होगी ? क्या वह मस्ती की जिन्दगी होगी ? क्या गरीबी फैली होगी ? यह सब सोचते ही उसके मन की उदासी बढ़ती जाती है मन सूना हो गया है।

नसीबन की आँखों में चमक भर गयी थी। उसका बदन खुशी से थरथराने लगता है। नसीबन खुशी से रो पड़ी थी। वे सब बच्चे जवान होकर लौट रहे थे। नसीबन दौड कर घर आती है। "बोरा फटी दरी, मैली चादर···नीचे बिछा लो और आराम करो····।"[66] सुबह तक के लिए रात में उसी पेड़ के नीचे कट जाती है।

<u>सलमा</u>

सलमा अस्पताल में नौकरी करती है। वह स्वभाव से सहज संघर्षशील है। विवाह की जंजीर उसे और गुलाम बना देती है। इसी जंजीर से वह तड़पती रहती है। सलमा का पति मकसूद है। चिकवों की बस्ती में हिन्दू और मुसलमान दोनों ही जी रहे थे। मकसूद और यासीन जब इस बस्ती में आ जाते हैं। सलमा सतार को बहुत गहराई से प्यार करती है। लेकिन अनाचारी से पति को छोड देना

सतार के साथ ही लेने की क्षमता उसमें नहीं है।

सलमा के मकान के पास पीपल के सामने पुरान मकान था। उस मकान में कोई भी घूसने की हिम्मत नहीं करता है। सलमा जब अस्पताल से लोट आती है, तो सतार अपनी कोठरी में बेठ जाता है। पूरी बस्ती बड़ी उदास रही थी। जानू के मकान के सामनेवाला पीपल भूतों की तरह हँसने लगताहै। सतार ओर सलमा का किस्सा बस्ती में धीरे धीरे फ्ले जाता है। साईं अपने को छोटा महसूस करता था। उसको जनाने अस्पताल में दरबान की जगह मिल जाती है। सतार बहुत उदास रहने लगता है। सतार को सलमा की बेवफाई के मारे डाल रहे थे। सलमा अपने घरवाले से तलाक भी चाहती है ओर सतार के साथ जिन्दगी गुजार कसती थी मगर वह राजी नहीं होती। सलमा के घरवाले मकसूद के साथ एक आदमी उस बस्ती में आता है। वह अलीगढ़ का रहनेवाला था। अपने को वह सियासी कारकून मानता है। सियासी कारकुन जब चिकवें की दुनिया की खबरों से अलग रहे हैं। "इन्हें यह भी नहीं मालूम कि मुल्क में क्या हो रहा है···कि मुसलमानों को एक नया मुल्क मिलनेवाला है, जिसके लिए जद्दोजहद चल रही है।"[67]

सतार भी गफूर केसाथ साथ जानवर कमाने लगते थे। कसाई का काम वही करता है। सतार को जानवर मारने में मजा आती थी। वह सलमा का पीछा अब करता रहता है। सलमा भी आँख छुपाकर उससे बातें करती रती है। गोश्त बाजार से लोटकर वह जनाने अस्पताल के फाटक के पास इन्तजार करते बेठते हैं। "पर उसके रंग ढंग समझ में नहीं आते। एक तरह से सोचता हूँ तो ठीक भी लगता है···उसका आदमी आ गया है, अब उसे मेरी जरूरत नहीं है, और हो भी क्यां···लेकिन समझ मेंनहीं आता में क्या करूँ···।"[68] सतार के मुख पर अनेकों भाव आ जा रहे थे।

अेक दिन अस्पताल के फाटक पर सतार को देखते ही सलमा भाग जाती है। और सिर्फ इतना ही कहकर चली जाती थी। कल रात मुझे पीपलवाल घर में मिलना। एक अजीब सपने की तरह वह गुजर रहे थे। वह यही सोचते रहते है कोई खास बात जरूरी है, नहीं तो सलमा इतनी उदास न होते और कल रात को न बुला देती। दिनभर वही इन्तजार में रहते हैं। उसे लगता हैं सलमा को उसने अच्छी तरह देख नही लिया था। आसमान में बादल छाये हुअे थे उसीमें

वह सलमा को बहुत प्यार करेंगे। सलमा की बार-बार देखे हुए चेहरे की याद में बैठे रहे थे/।

"...और जब उसकी आँख खुली तो चौंक कर उसने देखा ..... शायद चाँदनी फैली थी .... तभी अजान की आवाज कानों में पड़ी ... सुबह हो चुकी थी .... रातभर वह सोता ही रह गया थी ... यह हुआ क्या...."69

सतार को बहुत पछतावा होता है। नशे में वह जब सोये हुए थे तो उनका कोई पता चलता ही नहीं वह मन में सोचते रहते हैं सलमा जरूर आयी होगी और इन्तजार करते ही लौट गयी होगी। उसने क्या सोच लिया होगा। वह मिलेगी तो मैं क्या उसे बताएगा और वह यकीन नहीं करेगी। उसी रात के बाद सलमा बदल जाती है। साथ ही दूसरे दिन में सतार को अस्पताल की नौकरी से जवाब मिल जाता है।

आजादी का आन्दोलन देश भर फैल रहा था। शहर में कुछ लोग भी थे जो राजनीति में भाग लेते थे जिनकी जबान पर गांधी, नेहरू और जिन्ना का नाम बार बार आता रहता है। चिकवों को यही मालूम था कि हम गुलाम हैं और गुलामी की वजह से गरीब हैं। शहर में अजीव-सी सनसनी थी। "तब रात हो रही थी... लपटों की रोशनी चारों तरफ फैल राही थी लोगों के दिलों में खुशी भर रही थी क्योंकि इन्तकाम का संतोष छोटा नहीं होता...।"70 चिकवों की बस्ती में नौजवान लड़के सीना फुलाकर घूमते रहे थे। सतार छुरी छिपाकर बैठ जाता है।

सलमा जब यह सुनती है तो उनके दिल दहल से उठते हैं। सतार यह क्या करना चाहता है। कहीं किसी अंग्रेज ने पिस्तौल चला दी तो सतार का क्या होगा ? सलमा को बड़ी परेशानी थी। उसका पति मकसूद दिन भर घर में पड़ा रहता था। इसलिए वह कहीं भी निकल नहीं पाती थी। और मकसूद का दोस्त दिन भर खाता और पड़ा रहता था। सलमा बहुत परेशान थी लेकिन कोई रास्ता नहीं है। आखिर वह हारकर रतन की दुकान पर चली जाती है यही उनका आसान तरीका था। क्योंकि वहअस्पताल आती ही थी। रतन ने सलमा को देखा तो चौंक उठता है। सतार का कुछ पतापूछने वह रतन के दुकान आती है। वह उनको कहती है तुम्हें मिला होगा तो मैं पूछ रहीं थी ऐसा कह देना।

सलमा डयूटी पर चली जाती है। लेकिन सतार सलमा को नहीं मिलता। रतन उनको कहता तो उससे कहना जब मर जाऊँ तो मेरी कब्र पर मिलने चली आओ वही पर मुलाकात होगी। सतार मकसूद को बड़े गौर से ताकता रहता था और उसके सामने सलमा का चेहरा घूम जाताथा। मकसूद के लिए सलमा उसे छोड़ नही सकती है। सियानी कारकुन यासीन की नजरों में एक समझदारी की झलक दिखाई देती थी। "हिन्दुओं की चालों को नहीं समझते। हिन्दू कौम कभी हमारे साथ नहीं हो सकती। हमने हिंदुस्तान पर सदियों···की है। आजादी उसीके बाद··· बिल्कुल तय है···।"[71]

मकसूद की आँखों की चमक बढ़ती जा रही थी। सतार जब अपनी कोठरी में आता है तो उनका मन बहुत भारी हो जाता है। उसके दिमाग में तरह तरह के खयाल आते हैं। उसे लगता है कि पाकिस्तान बनने से एक नई जिन्दगी देनी पड़ेगी। करोड़ो मुसलमानों के बीच उसकी बिसात क्या होगी। बेकारी और नाकामी से मुक्ति मिल जायेगी। "तभी मकसूद की वह बात कि वह बाहर जा रहा है, उसके दिमाग से···एकाएक काँपी थी···एक नरम सा हाथ उसे सहला गया था और उसने तय किया था कि वह सलमा से मिलेगा···।"[72]

सलमा की आहट लेना चाहते थे। उसका मन उदास हो जाता है। उसे लगा कि रतन से सलमा ने मिलने की जो बात की थी उसमें कोई ईमानदारी नहीं है1 अगर सलमा सतार को मिलना ही चाहती थी तो अपने आप मिल सकती थी। इफ्तिकार भी सन्नाटे में था। पाकिस्तान बना तो यह सब भी पाकिस्तान चलेंगी। तब सलमा का क्या होगा। सतार कह देता है सलमा अगर पाकिस्तान जायेगी तो मैं भी जाऊँगा नहीं तो जायेंगी मैं भी नहीं जाऊंगा।

मकसूद और यासीन अहमदाबाद की तरफ चले जाते हैं। वह उन्हें छोड़ने को जब गली के मुहाने से लौट रही तो उसे सतार का ध्यान आता है। वह मस्जिद की तरफ चली जाती है। सतार की कोठरी के सामने वह गुजर रही तो इफ्तिकार को शक आया था। सलमा को वह पहचानता है। सलमा चलने लगती है तो उसने रोक लिया था। तभी से सतार बाहर निकल आता है। सलमा एक बार

उनकी तरफ देखती है तो उसकी आँखों में उदासी भरी थी। उन आँखों में सोच सोचकर उसका मन डूब जाता है। "रात की झिलमिलाहट थी कोई गूँज भी उनमे नहीं थी···उनमें वही खिलखिलाहट थी, जो हपले कभी देखी और महसूस की थी····।"[73]

सतार बहुत हिम्मत करके सलमा के पास पहुँच जाता है। पर मुँह से बात नहीं निकल पा रही थी। आखिर पूछ लेता है, "अस्पताल जा रही हो। सलमा ने मुस्करा दी थी। वह कहते हैं, "अगर पाकिस्तान बना तो तुम···· जाओगी।"[74] अस्पताल के फाटक पर पहुँचते ही सलमा ने सतार से मुस्कराते हुए कहा था "दोपहर में डाकखाने के पास मिल जाना मुझे उधर काम है। इतना कहकर वह फाटक में घुस जाती है। सतार कुछ देर तक खड़ा रहता है। यासीन और सलमा का कोई मामला नहीं है। वात यह है कि सतार कि, मकसूद के रंग ढंग ही अजीब हैं। शाम होते ही मकसूद औरतों की तरह सजता है। आँखों में काजल डालता है, बालों में तेल डालता है, गालों पर भी लाली लगा लेता है और यासीन के पास बैठ जाता है। यह सब देखकर सलमा रो रोकर कुछ बर्दाश्त नहीं कर सकती।

सतार के सामने मस्जिद में बैठे मकसूद और यासीन के चेहरे घूम रहे थे। यासीन ने मुसलमानों की तैयारी शुरू की थी। यासीन का नाम सुनते ही सतार का मुँह बिगड़ जाता है। सलमा को लेकर वह जब नसीबन के घर आता है तो घर में सन्नाटा छाया हुआ था। नसीबन बच्चन के घर चली गई थी। चारों तरफ उत्तेजना व्याप्त रही थी। खून में गर्मी आ गयी थी।

सलमा पाकिस्तान जाने से पहले रात दो बजे नसीबन से मिलने आती है और सतार की पूछताछ कर रही थी। नसीवन बताती है वह घर पर नहीं है। सलमा और मकसूद पाकिस्तान चले जाते हैं। सलमा जाते समय आंसू रोक नहीं पाती है। हमारे साथ चलो····पर वह माना नहीं···कहने लगा, वहीं जाकर क्या मिल जाएगा। और नाराज होकर चला गया···कहता था, मैं बच्चे को अपना कहूँगा पर तू यहीं रूक जा···बताओ न बुआ, ऐसा भी कही होता है ?"···वह मेरी मजबूरियाँ नही समझता। कैसे रूकना हो सकता है यहाँ····।"[75]

समुद्र में खोया हुआ आदमी

एक शहर में रहनेवाले परिवार की कथा है। परिवार का प्रत्येक सदस्य

अपने अपने संघर्ष में जूट जाता है। यह उपन्यास व्यापक दृष्टि से अधिक विस्तृत है। यह एक सफल उपन्यास है। यह उपन्यास मध्यमवर्गीय संस्कारों का चित्रण है। यह कथा उस घुटते, परेशान होते और टूटकर बिखरते परिवार का चित्र प्रस्तुत करती है।

1· **रम्मी**

श्यामलाल की बीवी है। वह एक साधारण नारी है। अपने शौहर पर उसको पूरा यकीन है। बीरन नौ सेना में भरती हो जाता है। तब घर में खुशी की लहर दोड़ रही थी। बीरन चले जाने के वाद घर बहुत सुना पड़ा था। पूरे घर पर बीरन का व्यक्तित्व छाया था। श्यामलाल गहरी नजर से रम्मी को देख रहे थे। रम्मी उन्हें पहले से कम उम्र की लगी थी। उसके बदन में चुस्ती भर दी थी। बालों में काला रंग आ गया है और ओठों में अजीब-सी लाली भी है। रम्मी को श्यामलाल की यह तारीफ पसन्द नहीं है। वह गुस्से में आती है और कहती है, "बगैर सोचे समझे हुक्म चलाते रहते हो। तुम्हें क्या तकलीफ तो हमें उठानी पड़ती है।"[76] तारा हरवंस से शादी करना चाहती है। तरह तरह के खयाल रम्मी के दिमाग के आते है। उसका दिल घबराने लगता है। नींद बिलकुल उचलट जाती है। रम्मी का दिल घवराने लगता है1 समीरा जब कॉलेज चली जाना चाहती है तो उसको डाँटती है और कहती है सीधी घर आना। रम्मी क्रोध में उबल रहती है- "ज्यादा जबान चलाने की जरूरत नहीं है। जो कहा है, उसे खुले कान सुनलो। अगर छः बजते हैं तो जरूरत नही···कालिज-फालिज जाने की।"[77]

बीरन का खत आता है तो समीरा रम्मी को खत पढ़ाकर बताती है बीरन कुम्भकरन के देश जा रहा है। वहाँ से लौटकर वापस घर आएगा। रम्मी को खत समझने के लिए दोबारा समीरा पढ़ती थी। बीरन को जहाज की ज़िन्दगी अजीब-सी लापरवाही भरी उदासी लगी थी। बीरन बहुत उदिग्न था। "चारों तरफ नीलता थी···निर्जन एकांत वह मंत्रमुग्ध सा देखता रह गया था। प्रकृति की विराटता सामने फैली हुई थी···झक्कड़ चले रहे थे। सर्द हवा और बर्फ···के अलावा कहीं कुछ भी नहीं था···चारो ओर ···बर्फ और खामोशी···सन्नाटा और बर्फ की सफेदी···"[78] खाड़ी के कगारों को बीरन देखता रहता है।

श्यामलाल बहुत परेशान थे। क्योंकि बीरन का मनीऑर्डर या चिठ्ठी

नहीं आयी थी। वह पुरी तरह से फँस जाते हैं। घर में रम्मी के स्वर दबे उन्हें बराबर कोंचती रहती है। उन्हीं दिनों से घर में सन्नाटा छाया रहा था। श्यामलाल रम्मी का खयाल नहीं करते हैं। सुबह बहुत उदास लगी थी। रम्मी अपने में सोचती रही थी। उसकी तबीयत वैसे ही भारी थी। उसका जी नहीं लगता है। हर काम से मन खिन्न हो जाता है। "रात को पड़ी दस्तक ने भी उन सबको मन ही मन कहीं डरा दिया था - कहीं कोई चोर तो नहीं था।···आजकल चोरों ने बहुत से तरीके निकाल रखे हैं।···फिर घर में जवान लडकी है···क्या पता···कब किसकी नजर बदल जाए।"[79]

रम्मी के सामने एक विशाल तस्वीर खड़ी हो जाती है। लेकिन जब लिखी हुई तारीख से बीरन नहीं आता तब सबका मन शंका से उतर जाता है। रम्मी गुस्से से कहती है लड़के की हमें यही बात पसन्द नहीं है। लिखता है कुछ और करता है कुछ। रम्मी बीरन के खयालों में ही खो बैठती है···"मैं चलती थी···उसके आने से पहले घर में···दो चार चीजें मंगा लू····उसकी पसन्द की एकाध···चीजें तैयार कर लूं···।"[80] फिर से बीरन का खत आ जाता है कि वह विलायत जाता है।

पांचवे दिन एक आदमी श्यामलाल के घर में चला आता है और कहता है मैं बीरन का दोस्त हूँ चरनजीत बहुत संभलकर सधे हुए स्वर में कह देता है कि "वीरेन्द्रनाथ कहीं खो गया है···" उसके बाद से उसका कोई पता नहीं है। रम्मी काँपती हुई और खड़ी हो जाती है। श्यामलाल ने टूटती हुई आवाज में कहाँ सिंगापूर मे होगा तो खबर मिल जाती है।···"आपको यह खबर दे देना जरूरी था···इसीलिए मैं आया था। वैसे आप ज्यादा परेशान नहीं····अगर कोई खबर मिली तो जहाज से फौरन आपको भेजी जाएगी···।"[81]

रम्मी ने दीवार से सर पटक देकर नीम बेहोशी में रो रही थी। घर में खामोशी छायी हुई थी। श्यामलाल किसीकी बात सुन ही नहीं पाते हैं। पास पड़ोसवाले घटना जानने के लिए आते हैं और दुःख प्रकट करके लौट जाते हैं। जिन्दगी उसी रफ्तार से जारी थी। चारों तरफ डरावने की छाया रहती है। रम्मी भीतर से सिसक रही थी। श्यामलाल पागलों की तरह दिल्ली में नौसेना दप्तर के चक्कर काटते रहते हैं। बीरन के सकुशल लौट आने की प्रार्थना घर के सभी लोग कर

रहे थे। रम्मी ने आँसू भरी आँखों में कहा था, "उसे मिठाई बहुत पसन्द थी··· चुरा चुराकर चीनी खाता था, हे भगवान। आज से चीनी तुम्हारे अर्पण··।"[82]

श्यामलाल पीपल के नीचे खड़े होकर बीरन का इंतजार करते ही रहते हैं। रम्मी समीर का क्या होगा ऐसा वह सोचते रहते हैं। तरह तरह के खयाल उन्हें सताते हैं। रम्मी रामायण की सगनौती निकाल रही थी। ···"भगवान के लिए ऐसा मत सोचो···जरा सी आहट होती है तो लगता है···वह आ गया। गली में कोई सवारी रुकती है तो लगता है कि वही है··दरवाजे तक कोई आता है तो शक होता है कि कहीं वह ही न हो···मेरा मन कहता है··।"[83]

रम्मी सिसकने लगती है। श्यामलाल चुप बैठे थे। कोई किसीको रोने से रोकता नहीं है। किसी के पास कुछ नहीं है। दप्तरवालों ने भी आसरा छोड़ दिया है, सरकार सोचती है कि वीरेन्द्रनाथ को अब मरा हुआ मान लेना चाहता है। कुछ क्षणों तक श्यामलाल सोचते ही रहते हैं। रम्मी बहुत खटके की नींद सोती थी। आधी रात को हड़बड़ाकर जागती है और रोते रोते फिर सो जाती है। श्यामलाल उनको समझाकर कहते हैं, रम्मी अब आसरा करने से कोई फायदा नहीं है। रम्मी चुपचाप सुन रही थी। श्यामलाल कहते है, परमात्मा के लिए ऐसा मत कहो··· "परमात्मा के लिए उनसे जाकर कहो कि कुछ दिन और इन्तजार कर ले - बीरन बाबू। अगर यह हुआ तो मैं मर जाऊंगी। मैं तुम्हारे पैर पड़ती हूँ।"[84]

सरदार अपने पैसे उगाहने घर पर चक्कर काटते हैं तो रम्मी की तकलीफ सुनकर सहानुभूति प्रकट कर देते हैं। रम्मी उसकी बात के खोखलेपन को समझती है। मकान मालिक ने तगादा शुरू कर दिया तो एक दिन आपको शहर लौटना चाहिए। श्यामलाल निरीह हो जाते थे।···"मैं तुम्हारा पैसा-पैसा चुका दूंगा···थोडी मोहलत और दे दो···"[85] समीरा, रम्मी और श्यामलाल भी उसके व्यवहार से बहुत छोटा महसूस कर रहे थे।

रम्मी बहुत परेशान थी। रम्मी और समीरा रसोई में बैठी रहती है। रम्मी बार बार यही सोचती रहती है कि समीरा का कुछ इन्तजाम कर जाता है तो अच्छा है। ऐसे घर में जवान बेटी का रहना बहुत खतरनाक था। रम्मी यह

सोच लेती है कि तारा की मदद करने के बहाने वह कुछ दिनों के लिए समीरा को उसके पास भेज देना चाहती है। पर उसके घर में हरबंस की बहन आती है। वहाँ कोई गुंजाइश नहीं रह गयी थी। रात भर श्यामलाल बाहर टहते हैं। तो रम्मी और समीरा बहुत बेसहारा महसूस करने लगती हैं। कई बार रम्मी कह देती है··"न हो तो उधर ही कोई कमरा देख लो। सस्ता भी मिल जाएगा और तुम्हारी इतनी दूर आने जाने की परेशानी भी बच जाएगी।"[86]

श्यामलाल ने सब कुछरम्मी पर ही छोड दिया था। रम्मी को समीरा की शादी की ज्यादा ही फिक्र थी। बहुत जोर से वह जकड़ी रही थी। जब एक दिन श्यामलाल सुबह से घर वापस नहीं आये थे तब समीरा को चिन्ता हुई। कुछ देर तो वह इन्तजार करती रहती है। रम्मी ने आंसू भरी आँखों से कहा, "हम लोगों की जिन्दगियाँ सिर्फ खिलवाड के लिए रह गई है जो खोया गया है··· वह भी खिलवाड बन गया। मुझसे यह सब बर्दाश्त नहीं होता···।"[87]

समुद्र में खोया मेरा बीरन रम्मी रूलाकर आवाज दबाती बैठी है। सिसकियों से उसका पूरा बदन हिल जाता है। हिचकियाँ बंधती देखसमीरा पानी ले आती है। बीरन ही माँ की परवरिश करता है। रम्मी के हाथ में हमेशा एक बस्ता रहता है। उस बस्ते में बीरन के खत, मनीऑर्डर, रसींदे, ट्रस्ट द्वारा समीरा के लिए रूपये दिए जानेवाले वगैरह भरी रहती है। रम्मी बीरन की मौत के मुआवजे के काम में जुट जाती है तब बाहर का हालचाल देखकर उसे बड़ा साहस मिलता है। रम्मी थकी हारी घर में लौटती है तो सिर पर बोझ भी होता है। जब से समीरा ट्रेनिंग के लिए चली जाती है, उसका मन भी घर में नहीं लगता, वह उठकर तारा के पास जाती है।

काली आँधी

कमलेश्वरजी ने इस उपन्यास में मानवीय संवेदना को अत्यन्त सशक्त रूपों में उद्घाटित करने का प्रयास किया है। राजनीति के घृणित और अपमानजनक वातावरण का संत्रस्त वर्णन इस उपन्यास में किया गया है।

यह उपन्यास स्वाधिनता के पश्चात् देश ,में व्याप्त राजनीति के आंतरिक पहलुओं को निर्ममता से उद्घाटित करता है। उपन्यास की नायिका मालती है राजनीति में प्रवेश करती है और निरन्तर सफलता प्राप्त करके चली जाती है।

इसप्रकार "काली आँधी" उपन्यास में प्रमुख नारी पात्र मालती ही है।

1· **मालती**

बचपन से ही उन्हें राजनीति में रूची थी। मालतीजी के पिता बैरिस्टर प्रताप-राय की दफ्तर में असिस्टंट थे। प्रताप राय की मृत्यु के बाद जग्गी बाबू को राजनीति में बुलाया जाता है। वह प्रतापरायजी की मृत्यु के बाद उनकी जायदाद की देखभाल करते रहते हैं।

जग्गी बाबू को राजनीति बातों में दिलचस्पी नहीं है। ज्यादातर जग्गी बाबू बातों को टाल देते हैं। मालतीजी की बात को वह टाल देते हैं। मालतीजी एक धमाके के साथ राजनीति में आ जाती है। सफलता की सीढ़िया चढती थी। मालतीजी की शादी जग्गी बाबू से हो जाती है।

जग्गी बाबू खजुराहों में एक टूरिस्ट होटल चलाते थे। जब पहली बार मालतीजी ने घर से बाहर कदम रखा तो बहुत खुश थे। देश के निर्माण में औरतों को भी आगे बढ़ाने चाहते थे। वे कहते हैं, "हमारी आधी जनसंख्या जब तक तामीर में हाथ नहीं बँटाएगी, तब तक हर काम की स्पीड आधी रहेगी···यह बेहद जरूरी है कि हमारे घरों की औरते आगे आए और हर काम मे मर्दों का हाथ बटाएँ।"[88]

जग्गी बाबू की अफवाहें फैलती है - जग्गी बाबू का होटल होटल नहीं वह तो लोगों को पटाने की शिकारगाह है। वे अपनी बीवी को औरों के लिए छोड देते हैं। वे दोनों तरफ से दुखी थे। एक दिन मालतीजी से उनका झगड़ा हो जाता है। वह उनसे कहती है, आप यह होटल बंद कर दीजिए। मैं पब्लिक में यह नहीं सुनना चाहती कि हम लोगों ने होटल को बहाना बना रखा है। मालतीजी ने उन्हें गुस्से से भरी आँखो से देखा था। और इतना तो बोलती थी यह सब डिसकस करने के लिए मेरे पास वक्त नहीं है। और चलते-चलते मालतीजी इतना तो कह रही थी - "मैं होटलवाले की बीवी कहलाती रहूं···यह आपको

गवारा है तो ठीक है···।"[89]

जगतसिंह कुछ जरूरी तार लेकर आता है। डायरी उसके ही हाथ में थी। मालतीजी तारों को देख रही थी और जग्गी बाबू चुपचाप से बाहर निकल जाते हैं। मालतीजी को दो हफ्ते दौरों में जाना पड़ता है उन्हें महिला सेवा दल का गठन करना था। जग्गी बाबू को एक लड़की थी उनका नाम है लिली। वह खजुराहों के होटल में तीसरे दिन ही लिली को लेकर कहीं चले जाते हैं। एक क्षण के लिए वह उदास हो जाते हैं। बच्चों को अनाथाश्रम में दाखिल करना उन्हें पसन्द नहीं है।

मालतीजी को आँखों में आँसू बह रहे थे। छोटे बच्चों के प्रति उसके दिल में प्यार है। उनके चेहरों पर ममता की प्रशंसा चमक रही थी। उन्होंने अपनो को दुख से सँभाला है। जग्गी बाबू और मासूम लिली ट्रेन से कहीं दूर भागती जा रही थी। वह एक कुर्सी पर चुपचाप बैठ रही थी···"घर परिवार और पति की खुशियों की कीमत पर राजनीति का काम करें यह जरूरी है कि परिवार और पति की पूरी परवाह की जाए···समाज की खुशी का असली आधार यही है···"[90]

जग्गी बाबू लिली को स्कूल में दाखिल करके वापस चले आते हैं। उनकी आँखें उदास थी। वे खजुराहों लौट कर नहीं आये थे सीधे भोपाल चले जाते हैं। जग्गी बाबू की तकलीफ गहरी है तो मलातीजी का दुख भी कम गहरा नहीं है। दोनों अपने को बहुत संभालते हैं। जग्गीबाबू खजुराहो के रहनेवाले थे। मालती पढ़ाई के लिए विदेश जानेवाली थी। छतरपुर के प्रतापरायजी आते है तो मालतीजी के विदेशी जाने की बातें शुरू होती हैं पर मालतीजी ने विदेश जाने से साफ इन्कार किया है वह कहती है, "मैं कहीं नहीं जाऊंगी···मैं भारत में ही रहूंगी।"[91]

जग्गी बाबू भोपाल मे जाकर गोल्डन सन के असिस्टंट मैनेजर हो जाते है। लिली पंचमढ़ी मे रहती है उसे अपनी माँ से मिलने का मौका ही नहीं मिलता। मालतीजी चुनाव जीतकर एक दिन मिनिस्टर बन जाती है। मालतीजी में अद्भुत आत्मशक्ति का धीरज है। मालतीजी की नीति बेहद सफल साबित होती है। लोकसभा के चुनावों के लिए उन्हें भोपाल क्षेत्र मिल जाता है। भोपाल में एक बंगले में वह इन्तजाम कर लेती है।

मालतीजी के छोटेमोटे कार्यकर्ता वाह वाह करते थे। क्योंकि मालतीजी नें चुनाव जीत लिया था। उनकी विशेषता यह है बड़प्पन से वह विरोधी बौने हो जाती है। तमाम कार्यकर्ताओं पर मालतीजी के भव्य व्यक्तित्व जाहिर था। मालतीजी के जाने के बाद सरगर्मी बढ़ती ही जाती है। चुनाव कार्यालय में कार्यकताओं की भीड़ बढ़ती जा रही थी। उम्मिदवार चन्द्रसेन के पक्षधरों ने शहर भर मोर्चा निकाला था। वे चुनाव कार्यालय के सामने नारे लगाने लगते हैं।

मालतीजी को वह अपमानित करके उनके विरोधी नारे लगा देते हैं। वह जनता के सामने चुनाव के मैदान में उतरती है। "भूख और गरीबी···यह एक दिन का सवाल नहीं है। हमें यह सवाल हमेशा के लिए सुलझाना है।··और यही वजह है कि हमारी पार्टी हमारी रहेगी।"[92]

सनसनी फैल रही थी। सारा वातावरण जहरीला हो जाता है। नरसी सेठ जग्गी बाबू को बुलाकर खास हिदायत देते हैं वह कहते हैं यह हमारे होटल का सौभाग्य है कि मालतीजी जैसी देश की नेता है हमारे यहाँ रहेंगी और यहाँ से जीत कर जायेंगी। आप उनका खयाल रखिये।

मालतीजी चुनाव कार्यालय में तफसील लेती है। जान-पहचानवालों लोगों से बातें करती रहती है। उनकी हालचाल पूछ रही थी। उनके स्वागत के लिए नरसी सेठ आते हैं। मालतीजी एकाएक जग्गी बाबू को देखेती है तो वह भी हाथ जोडकर नमस्ते करती हैं। हार या जीत का मैदान खड़ा हो जाता है। राजनीति का यह नशा सफलता का नशा है। सफलता की इस दौड़ में कोई भी थक नहीं जाता है। सफलता की मंजिल सिर्फ सफलता ही होती है। एक तरह की दौड़ मालतीजी की रहती है।··"इस दौड़ का कोई पड़ाव या मंजिल होती नहीं····सफल व्यक्ति सिर्फ दौड़ता रहता है।····और दो दौड़ना ही उसकी सफलता बन जाती है। क्योंकि दौड़ते-दौड़ते वह यह भूल जाता है कि उसने दौड़ना क्यों शुरू किया था।"[93]

मालतीजी ने शाम को मिटिंग में बहुत जोशीला भाषण कर दिया था। वह कहती है हमारी सबसे बड़ी जरूरत है गरीबी और भूख को मिटाना। लाला

दिनानाथ भी अपने जाति का झण्डा लेकर खड़े होते हैं। चुनाव कार्यालय में जो अनाज इकट्ठा किया था उस आवाज को, उस अन्न को चन्द्रसेन जला देते हैं।

चुनाव में मालतीजी की जीत हो जाती है। आनंद से लोग पागल हो गये थे। फूलों की बारिश हो जाती है। चन्द्रसेन के कार्यकर्ता नदारद हो गये थे। उनकी हार हो गयी थी। उनके साथी जाते समय चीख गये थे..."मेरे साठ हजार मुसलमान...कहाँ गए...मेरे साठ हजार मुलसमान कहाँ गए"[94] मालती की जीत से नारों की आवाज सड़क से गूंज आती है। मालतीजी को शानदार सफलता पर बधाई देने के लिए लोग जमा रहे हैं।

मालतीजी को दिल्ली जाने की जल्दी थी। वह गहरी सांस से रो पड़ती है। जब कुछ शांत है तो शून्य में देखती रहती है। "मेरी जिन्दगी क्या हो गई है। ओह...आंसू पोंछकर वे कहने लगी - ऊपर होगी...चलिए। चलेंगे जरा"[95] चौधरी साहब उनको मिलने आते हैं उनका यह आना उन्हें पसन्द नहीं है। उनका पूरा व्यक्तित्व बदल गया है। मालतीजी जग्गी बाबू और लिली को मिलने आती है। भयानक सन्नाटा छाया हुआ था। लिली बेटे इधर आओ। मालतीजी ने उसे प्यार से बाहों में समेटा है और वह कह रही है कि "बेटे, मैं...मैं...तुम्हारी माँ हूँ..."[96] लिली उन्हें जवाब देती है तुम मुझे पहचानती हो ?

मालतीजी आँखे भरकर लिली को देखती है। प्यार से चूमकर बेतरह रो पड़ती है। उन्होंने जग्गी बाबू को नमस्ते किया था और चली जाती है। जग्गी बाबू लिली को पहुँचाने जा रहे थे। दोनों की गाडियाँ पाँच मिनट के अंतराल से छूटती थी। दो दिशाओं को जानेवाली गाडियाँ थी। एक दिल्ली और दूसरी पचमढ़ी। मालतीजी की गाडी जब छूट जाती है तो। वे भरी आँखो लिये दरवाजे पर नमस्ते करते खड़े थे। कानों में मालतीजी जिंदाबाद । के नारे गूंज रहे थे। मालतीजी को विदा लेकर जग्गी बाबा की गाडी पर आ जाते हैं।

जग्गीबाबू सोच रहे थे मालतीजी शायद क्या दृश्य देखती होगी ? मन में एकही सवाल खड़ा होता है और वे बार बार सोचते रहते हैं..."और जग्गी बाबू...वे शायद देख रहे होंगी...लिली को प्यार करके...एकदम फूट फूटकर

रो पडनेवाली मालतीजी को ···या अपना गिलास छुपा लेने वाली मालतीजी को···या लिली को ऑटोग्राफ देनेवाली मालतीजी को···।"[97]

मालतीजी की विशेषता यही है कि उनमें रहने-सहने, खाने और पाने का एक विचित्र संतुलन मिलता है।

वही बात

कमलेश्वरजी के उपन्यासों में "वही बात" महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास मे नारी पात्रों में समीरा का स्थान ही विशेष महत्त्वपूर्ण रहा है। यह एक सफल उपन्यास है।

समीरा

समीरा और प्रशान्त एक दूसरो को प्यार करते हैं। प्रशान्त बहुत अशांत है। प्रशान्त राजधानी और साइट के बीच के चक्कर काँटता है। समीरा का यही वादा है कि ज्यादा बोलनेवाले लोग दूसरों की परवाह नहीं करते हैं और बहुत स्वार्थी होते हैं। प्रशान्त बम्बई मिटिंग के सिलसिले में जाना चाहता है। मगर समीरा ही उनके साथ जाना चाहती है। समीरा को प्रशान्त कहता है असफल आदमी की जरूरत किसी को नहीं होती।

समीरा भावुक हो उठती है। भावुक से भी अधिक होकर प्रशान्त की ओर देखती रहती है। प्रशान्त उसको समझाता है और कहता है, "यह प्रोजेक्ट पूरा हो जाये, उसके बाद आराम ही आराम रहेगा फिर तुम होगी, मैं हूँगा और अपनी हमारी दुनिया····जिद मत करो···जिद से परेशानियाँ कम नहीं होती···बढ़ती ही हैं···।"[98]

प्रशान्त जब लौटकर आताहै तो वह बहुत खुश है। मुख्यमंत्री उसकी क्षमता की तारीफ करते हैं और उसको यह भी सलाह देते हैं कि आदिवासियों को समझाकर शान्त करो। प्रशान्त उम्मीद करता है कि समीरा भी उसकी खुशी में खुश होगी। लेकिन समीरा कोई खुशी जाहिर नहीं करती। प्रशान्त प्रोजेक्ट में डूब जा रहा है और समीरा उतनी ही अधिक अकेली हो रही है।

कई दिनों बाद समीरा नकुल से प्यार करने लगती है। प्रशान्त इस बात से खामोश हो गया है। समीरा संत्रस्त से तटस्थ थी। समीरा से वह कहता है, "तुमने मुझे धोखा दिया होता तो मैं बर्दाश्त कर लेता, पर तकलीफ तो इस बात की है कि तुमने मुझे तकलीफ दी है····काश। तुम कुछ और इन्तजार कर लेती····ये सब···मैं तुम्हारे लिए ही तो कर रहा था।··तुमने मुझे वक्त तो दिया होता····।"[99] प्रशान्त का मन कडवाहट से भर उठता है।

प्रशान्त एक दिन दिल्ली चला जाता है। बीच में सन्नाटा भर जाता है। वह समीरा से इतना ही कह देता है कि तुम अपने आप को पूरी तरह मुक्त समझना। तलाक के कागजों पर मैं दस्तखत करना चाहता हूँ तुम नकुल की बीवी की तरह नकुल के साथ रहना। जिन्दगी में तमाशा न करना। इतना कहकर वह चला जाता है। सब कुछ में एक नयापन ही था। नकुल अब चीफ इंजीनिअर है। प्रशान्त वर्मा के स्थान पर अब वहाँ चीफ इंजीनियर नकुल आर्य और श्रीमती समीरा आर्य का नाम लिखा जाता है। समीरा के अकेलेपन को नकुल भरने की कोशिश करता है। चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था। समीरा नींद से चीख उठती है बुरा सपना देखती है। उसका शरीर पसीने से नहकर थर थर काँप रहा है।

नकुल भी उसकी चीख से जाग गया है - क्या हुआ ? क्या हुआ ? कोई सपना देख रही थी - हाँ नकुल····पता नहीं कैसा सपना था···सब लोग जमा थे।··मेरे घरवाले प्रशान्त के घरवाले।··प्रशान्त भी था। घर में त्योहार या शादी जैसा कुछ चल रहा था··· मैं पहुँची तो सबने मुझे घूरना शुरू किया··· हर तरफ से आवाजे आने लगी···निकलो इस कलुटा को। पोंछ तो इसका सिंदूर। मार डालो इसे···धक्के देकर बाहर कर दो।···"[100] समीरा की आवाज बदल रही थी।

नकुल उसको समझाता है कि प्रशान्त को तो अब पता लगा है कि तुम उसकी बीवी होकर भी तुम उसकी जिंदगी से बाहर निकल चुकी है। प्रशान्त तुमसे कोई बुरा नहीं करना चाहता। समीरा बुरी तरह से सिसक सिसककर रो पड़ती है। आज तो यह घर खाली हो गया था - सिर्फ नकुल की जगह जाता हुआ प्रशान्त दिखाई प्रडता है। वह अपने आपको अकेली महसूस कर रही थी।

प्रशान्त साहब ने तो तीनों फेज का प्लानिंग किया था, सारा प्रोजेक्ट उसीके आधार पर एप्रूव होनेवाला था। नकुल को दिल्ली जाने की ऑर्डर आ जाती है तो समीरा अकेली नहीं रहना चाहती है वह उससे बडी ताकद से कहता है "सच्चाई सिर्फ यही नही है, मीरा। तरसता आदमी भी है। ऐसा नहीं है कि औरत ही अधूरी रह जाती है···आदमी भी अधूरा रह जाता है···।"[101]

नकुल दिल्ली चले जाते हैं। समीरा को वक्त काटते काटते मुश्किल हो रही है। आखिर उसने हारकर पत्रिकाओं की शरण ली थी। जितनी पत्रिकाएँ थी, एक एक करके उसने सब पढ़ डाली हैं। कोई भी लेख या कहानी अच्छी लगती है तो उसने दुबारा तिबारा पढ़ा है। उनसे चेंज नहीं मिलता है। अकेलापन की कुंडली उसके सामने तरह तरह के सर्प काँट रही है। चपरासी डाक लेकर आता है तो उसे एक लिफाफा दे देता है। उसने पता लिखा था - श्रीमती समीरा नकुल आर्य समीरा उस लिखावट को देख रही थी वही प्रशान्त का ही था। समीरा की आँखे डबडबा गयी। समीरा मिट्टी की मूरत की तरह बैठ रही थी। "अच्छा हुआ तुमने यह कह दिया···अब मैं अपनी तरह जी सकती हूँ···अपनी तरह मर सकती हूँ···।"[102]

नकुल चुपचाप से बाहर चला जाता है। काफी देर तक दोनों चुप रहे थे। चारों तरफ घर में सन्नाटा रहा था। दोनों खामोशी से बढ़ते हैं। उनकी खामोशी एक दिन टूटती है तो समीरा कहती है - "मैंने तो कुछ कहा नहीं। तुम्ही अधूरे पति की तरह रुक गये - हक होता है मुझे कगार से नीचे घाटी में फेंक देते···मैं तुम्हारी होकर मर जाती···।"[103] दोनों ही अपने आप को छिपाकर रो रहे हैं। कुछ दिनों में ही समीरा के लिए नकुल की उपस्थिति, उसकी निकटता, उसका प्रेम और यह सब कुछ धीरे धीरे कम होता जा रहा है।

कुछ दिनों बाद प्रशान्त साहब इन्स्पेक्शन बंगले में रहने आते हैं। समीरा उनसे नमस्कार कर लेती है। समीरा अपना आँचल संभालने लगती है। समीरा ने एक गहरी सांस लेकर प्रशान्त की ओर देखा। "समी मैं अब न तुम्हार प्रेमी हूँ···न पहाल पति···मैं अब सिर्फ तीसरा आदमी हूँ···।"[104]

प्रशान्त यही सोचता है समीरा ने मुझे अपने कारणों से क्यों छोडा था? नकुल खामोश हो जाता है। यह हार जीत का मामला है। यही हकीकत है। प्रशान्त ने अपने आपको संभाला है।...."जिन्दगी सूरज की तरह ऊपर चढ़ने लगती है, पर घर में शाम उतरने लगती है...और फिर रात। छायाएँ...बहुत लंबी...हो जाती हैं...और अलग अलग।...।"[105]

नकुल सोच रहता है और कुछ बोलने से उबर आता है। नकुल और समीरा प्रशान्त को विदा देते हैं और प्रशान्त चला जाता है।

सुबह दोपहर शाम

कमलेश्वरजी का यह भी महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास की विशेषता सभी उपन्यासों से अलग ही रही है। "सुबह दोपहर शाम" उपन्यास को कमलेश्वरजी ने रोचक सुसंगठित बनाने का प्रयास भी किया है। इसमें प्रमुख नारी पात्र है शान्ता।

शान्ता

शान्ता की शादी प्रवीण के साथ हो जाती है। सभी लोग मौज में रहे थे। इसी बीच औरतों ने मंगल गान गाने शुरू कर दिया था। तभी कही से दनदनाती हुई एक गोली छूट जाती है। गोली की आवाज इतनी कड़कड़ाती है कि चारों तरफ बिजली क्रोंध जाती है। औरतें चीखती घर के भीतर भाग जाती है। शान्ता क्रोंध से अपना घूंघट उठाती है और खडी हो जाती है। तभी दूसरी गोली छूट जाती है। एकदम खामोशी से सन्नाटा छाया जाता है। तभी तीसरी गोली छूट जाने के साथ एक आवाज निकल आता है - "कोई अपना जगा से नयी हटेगा।" भागने की कोशिश करेगा तो हमारा गोली से मारा जाएंगा...।"[106] तभी एक तरफ सरकते सूरज को रोकते हुए अंग्रेज सार्जण्ट चीखा खड़ा होता है।

बाबूजी और प्रवीण कुछ समझ गये थे। शान्ता कुछ नहीं समझी थी। तमाम गारद सबको घर लेता है और एक गोरा सार्जेण्ट पिस्तौल ताने प्रवीण की तरफ बढता है और उसने प्रवीण की छाती पर पिस्तौल रखकर कहता है किदर

हैय तुम्हारा भाई ? प्रवीण बहुत हिम्मत से कहता है - वह शादी में नहीं आया है। गारद को हुकुम दिया था - सारा तलाशी लो। गारद के लोग इधर उधर करते भीतर घुस जाते हैं।

सार्जेण्ट ने हवा में एक और फायर किया था और चीखा था - "नवीन। हम हुकुम देता ? सरैण्डर करने का···नई तो इदर सबी मारा जाएगा···सबी तरफ हमारा गारद लगा है···टुम निकल के नई जाने पाएगा···।"[107] प्रवीण का छोटा भाई बागी क्रांतिकारी है। इसलिए नवीन की तलाश में गारद के लोग आये थे। सभी रिश्तेदारों के दिलों में डर समाया था। लालाजी की बात सब मान चुके थे। पहली गाडी से ही बरात बहू को लेकर चले जाते हैं। आखिर रेलवई के बडे बाबू की लड़की की बारात थी।

इस मौके का फायदा उठकार नवीन वहाँ डिब्बे में पहुँच जाता है। और अपने भाभी को सिर्फ इतना ही कहता है आपका आशिर्वाद चाहिए। भाभी भी उसे पहचानती है और इतना कहता है। अम्मा को मेरा प्रणाम कह देना, भैया और बाबूजी को भी प्रणाम कह देना। नवीन लड़खड़ाता उतर जाता है तभी डिब्बे में गारद के लोग घुस जाते हैं। सभी के हाथों में पिस्तौल थी और कह रहे थे अब कोई नहीं बचेगा। प्रवीण और बाबूजी चौंक से उठते हैं।

बारात के सब लोग देख रहे थे। शान्ता ने घूंघट खोल दिया और वह सार्जेण्ट के सामने खडी हो जाती है। चीखकर उनको कहती है नहीं हटूंगी गोली चलने के बाद नवीन उतरकर भाग जाता है। वे सभी घर पहुँच जात हैं तो घर में रस्मे चल जाती है। घर का द्वार सजा हुआ था। मंगल कलश रखे थे। शांता और प्रवीण के आगमन से सभी औरते मंगल गान गाती हैं। शान्ता बड़ी प्यार से सबको देख रही थी। सब लोग आशिर्वाद दे रहे थे। ···"तुम्हारा सुहाग अचल रहे बेटा। जब तक तुम फलती फूलती रहोगी ···हमारे ये बूढे पैर नाचते रहेंगके···तुम्हारे सुख से हमारा पेट बंधा है बहू····ऊपरवाला तुम्हें सब कुछ दे।"

बाबूजी ऐलान करते हैं कि हमारे मुकदमे की आज तारीख है। शान्ता मुकदमे की बात पहली बार ही सुनती है। शान्ता को पूरा किस्सा मालूम हो जाता है। वह अपनी पुरानी खरंजोवाली ईटों की दीवार को झीने घूंघट में देख रही थी। इसकी वजह से घर मे धूप पडा है। बाबूजी खुशी से लोट जाते हैं। उन्होंने मुकदमा जीत लिया है सब कुछ शुभ ही शुभ हो रहा है। तभी हवेली की पहाड़ जैसी दीवार की खिडकी खुल जाती है और हवेली वाली चीख रही है - "छोटी अदालत से मुकदमा जीते हो···अरे मैं तो तुम्हें बडी अदालत तक पढाऊंगी···तुमने समझा क्या है···हमे कम मत लगाना···विलायत तक दौडा दौडा के मारुंगी··· हां···।"[108]

शान्ता पूरी दुनिया को महसूस कर रही है। प्रवीण पाठशाला में पढ़ाने चले जाते हैं। बाबूजी शतरंज चोपड खेलते हैं1 मंजू लड़कियों के साथ स्कूल चली जाती है। अम्माजी फूल गोभी सरसों की साग और शलगम के चक्कर में दिनभर धूप के पीछे भागती है। शान्ता को उसके घरवाले विदा कर रहे थे। शान्ता अपने मायके चल रही थी। गाड़ी की खुली खिडकी से बहुत दूर तक देख रही थी। तभी से एक धमाका हो जाता है गाडी चिंघाड ऐसे हिल जाती है कि भूकंप आया हो किसी की समझ में कुछ नहीं आता है कि क्या हुआ फिर एक ऊँची आवाज सुनाई पड़ती है - वन्देमातरम्···गोलियाँ आवाजें···सन्नाटा···गोलियाँ···चीखें····।

कुछ लोग अंधेरे में जंगल की ओर भाग जाते हैं। पूरा सन्नाटा छाया जाता है। गारद के सिपाही जिन्दा थे। क्रांतिकारियों ने सरकारी खजाना लूटा था। "ऐसा नहीं होगा···वो लुटेरे नहीं थे···वो इनकलाबी थे। वो हमें नही···सरकारे बर्तानिया का खजाना लूटने आए थे···।"[109] शान्ता उन क्रांतिकारियों को जंगल के अंधरे की तरफ भागते हुए देखती है। दूसरे ही दिन प्रवीण को अंग्रेजी कलेक्टर बुला लेते हैं तुम्हारा भाई को एक दिन हमको फाँसी देना पड़ेगा। वह कहता है नवीन हमारे वश मे नही है। अम्माजी, बाबूजी और प्रवीण अपने विश्वासों को टटोलते रहे थे। ···"हवेली तो एक अधिकार सवाल है···हवेली मिल जाने से हम अमीर नहीं हो जाएंगे···नवीन रास्ता बदल दे तो हमें हवेली शायद मिल

जाए, पर आजादी नहीं मिलेगी।"[110]

शान्ता अब वापस लौट आती है। शान्ता को बाबूजी कहते हैं, "तू मेरी बहु नहीं····तू मेरी लक्ष्मीबाई है··।"[111] ऐसा कहते हुए बाबूजी रोते हैं। उनको पता ही नहीं कि वे लाचारी में रोते हैं या खुशी के आंसू फूट पड़ते थे। मिर्जा साहब बाबूजी के साथ अपनी हवेली में आ जाते हैं। सामने तो नवीन खड़ा हो जाता है। उसे और साथी भी थे। नवीन ने आगे बढ़ते ही बाबूजी और मिर्जा साहब के पैर छुए तो मिर्जा साहब की आँखों में आंसू आ जाते हैं। आतंकवादियों से छुटकारा पाने का यही एक रास्ता है जब हर आदमी हर जाना भरेगा, तब वह आगे कभी उन आतंकवादियों को पनाह नहीं देता है।

"क्रांतिकारियों को आतंकवादी कहना गलत है···वे भी देश की उसी आजादी के लिए लड़ रहे हैं, जिसके लिए हमने भी प्रतिज्ञा की है····अन्तर सिध्दान्तों का है।"[112] कई दिन हलचल रही थी। जिला अधिकारी हरजाबा वसूल करते हैं। आन्दोलनकारी विरोधक तरे रहते हैं। प्रवीण बहुत खुशी से लौट रहा था। आते ही घर में खबर देता है - देखा, अहिंसा के रास्ते से कैसे मसलों को सुलझाया जा सकता है।

प्रवीण नवीन को साथ नहीं देना चाहता है। शान्ता की आँखों में आँसू यह सुनकर एकदम मोम की तरह जमा जाते हैं। शान्ता इतिहास से पूछ रही है - "क्या कहा तुमने ? बार बार यह सवाल गूंजता था····क्या कहा तुमने····।"[113] प्रवीण उससे कहता है मैं ऐसे भाई का साथ नहीं दे सकता। इस तरह देश आज़ाद नहीं होता। शान्ता प्रशान्त से कहती है - "देखो····तुम मेरा सुहाग जरूर हो···लेकिन देश के लिए कलंक हो····।"[114]

प्रवीण यह सुनकर बेहद तिलमिला उठता है और चीखने से एक तमाचा शान्ता को मार देता है। देश की चिन्ताएँ का तुमसे क्या लेना देना। देश की चिन्ताएँ कब से सताने लगी है। तुम अपने बच्चे को देखो, घर को देखो और आराम करो। मैं जो हूँ वही बनके रहूंगी। शान्ता ने बडे विश्वास से कहा। शान्ता ने आँखे बन्द कर ली और दादी को दूसरी बार विदा किया था वह ऊपर उठना चाहती है मगर

प्रवीण का धधका वह भूल ही नहीं पा सकती। शान्ता ने उसे "कलंक" कहा है।

प्रशान्त तिलमिला उठता है और यही चाहता है कि शान्ता को अपमानित करके उससे यह शब्द वापस लेने से मजबूर करे। उसके भीतर का पति कुचले हुए साँप की तरह फुफ्कार कर रहा है। शान्ता को प्रवीण कह रहा है - "यह कैसी औरत है····जो बातों को इतनी आसानी से टाल रही है····।"[115]

शान्ता दौड़कर आंगन में देखती है तो नवीन खड़ा था। अम्मा और बाबूजी मे नवीन को लेकर झगडा हो रहा था। वह कहता है मुझे भइया, मंजू और भाभी से बात करनी है मगर अम्मा ओर बाबूजी उनसे बात नहीं करने देते। पुलिस उनको गिरफ्तार करने आती है तो शान्ता नवीन को ऊपर छतवाले कमरे में बंद कर देती है। शान्ता दुर्गा बनी खड़ी होती है। शरम करो तुम हिन्दुस्तानी हो तुम्हारी आँखों में अपनी बहनों ताओं के लिए कुछ इज्जत करो। उनके जन्मों के संस्कार जाग जाते हैं वे बन्दूके फेंककर खड़े हो जाते हैं। नवीन की पिस्तौल से गोली निकलती है। अंग्रेज इन्स्पेक्टर की लाश वही छत पर गिर जाती है। बाबूजी ने देखा और कहा था - "यह बहू नहीं|···एक और बडी दादी पैदा हुई है।"[116]

अध्याय : 3

संदर्भ

1· कमलेश्वर - एक सड़क सतावन गलियाँ, पृष्ठ 25

2· कमलेश्वर - एक सड़क सतावन गलियाँ, पृष्ठ 34

3· कमलेश्वर - एक सड़क सतावन गलियाँ, पृष्ठ 65

4· कमलेश्वर - एक सड़क सतावन गलियाँ, पृष्ठ 65

5· कमलेश्वर - एक सड़क सतावन गलियाँ, पृष्ठ 66

6· कमलेश्वर - एक सड़क सतावन गलियाँ, पृष्ठ 56

7· कमलेश्वर - एक सड़क सतावन गलियाँ, पृष्ठ 68

8· कमलेश्वर - एक सड़क सतावन गलियाँ, पृष्ठ 71

9· कमलेश्वर - एक सड़क सतावन गलियाँ, पृष्ठ 83

10· कमलेश्वर - एक सड़क सतावन गलियाँ, पृष्ठ 83

11· कमलेश्वर - एक सड़क सतावन गलियाँ, पृष्ठ 92

12· कमलेश्वर - एक सड़क सतावन गलियाँ, पृष्ठ 99

13· कमलेश्वर, एक सड़क सतावन गलियाँ,पृष्ठ 100

14· कमलेश्वर - एक सड़क सतावन गलियाँ, पृष्ठ 120

15· कमलेश्वर - एक सड़क सतावन गलियाँ, पृष्ठ 85

16· कमलेश्वर - एक सड़क सतावन गलियाँ, पृष्ठ 87

17· कमलेश्वर - एक सड़क सतावन गलियाँ, पृष्ठ 89

18· कमलेश्वर - एक सड़क सतावन गलियाँ,पृष्ठ 102

19· कमलेश्वर - एक सड़क सतावन गलियाँ, पृष्ठ 111

20· कमलेश्वर - एक सड़क सतावन गलियाँ,पृष्ठ 115

21· कमलेश्वर - एक सड़क सतावन गलियाँ, पृष्ठ 115 - 116

22· कमलेश्वर - डाक बंगला, पृष्ठ 36

23· कमलेश्वर - डाक बंगला, पृष्ठ 61

24· कमलेश्वर - डाक बंगला, पृष्ठ 63

25· कमलेश्वर - डाक बंगला, पृष्ठ 70 - 71

26· कमलेश्वर - डाक बंगला, पृष्ठ 74 - 75

27· कमलेश्वर - डाक बंगला, पृष्ठ 98

28· कमलेश्वर - डाक बंगला, पृष्ठ 101

29· कमलेश्वर - डाक बंगला, पृष्ठ 103

30· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 28

31· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 30

32· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 41

33· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 46

34· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 52

35· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 64

36· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 74

37· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 75

38· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 79

39· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 80

40· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 84

41· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 88

42· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 96

43· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 31

44· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 43

45· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 44

46· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 50

47· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 51

48· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 61

49· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 64

50· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 65 - 66

51· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 72

52· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 75

53· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 76

54· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 76 - 77

55· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 88

56· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 91

57· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 97

58· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 111

59· कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 38

60· कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 39

61· कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 45

62 कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 89

63· कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 104

64· कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 121

65· कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 132

66· कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 136

67· कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 46

68· कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 48

69· कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 50 -51

70· कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 53

71· कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 56

72· कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 59

73· कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 63

74· कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 64

75· कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 128

76· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 22

77· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 26

78· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 39

79· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 50

80· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 51

81· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 54

82· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 61

83· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 67

84· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 76

85· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 78

86· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 85

87· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 95·

88· कमलेश्वर - काली आँधी, पृष्ठ 5

89· कमलेश्वर - काली आँधी, पृष्ठ 8

90· कमलेश्वर - काली आँधी, पृष्ठ 11

91· कमलेश्वर - काली आँधी, पृष्ठ 13

92· कमलेश्वर - काली आँधी, पृष्ठ 22

93· कमलेश्वर - काली आँधी, पृष्ठ 35

94· कमलेश्वर - काली आँधी, पृष्ठ 109

95· कमलेश्वर - काली आँधी, पृष्ठ 114

96· कमलेश्वर - काली आँधी, पृष्ठ 117

97· कमलेश्वर - काली आँधी, पृष्ठ 120

98· कमलेश्वर - वही बात, पृष्ठ 34

99· कमलेश्वर - वही बात, पृष्ठ 58

100· कमलेश्वर - वही बात, पृष्ठ 64

101· कमलेश्वर - वही बात, पृष्ठ 71

102· कमलेश्वर - वही बात, पृष्ठ 74

103· कमलेश्वर - वही बात, पृष्ठ 75

104· कमलेश्वर - वही बात, पृष्ठ 65 - 66

105· कमलेश्वर - वही बात , पृष्ठ 68

106· कमलेश्वर - सुबह दोपहर शाम, पृष्ठट 72 - 73

107· कमलेश्वर - सुबह दोपहर शाम, पृष्ठ 74

108· कमलेश्वर - सुबह दोपहर शाम, पृष्ठ 103

109· कमलेश्वर - सुबह दोपहर शाम, पृष्ठ 110

110· कमलेश्वर - सुबह दोपहर शाम, पृष्ठ 113

111· कमलेश्वर - सुबह दोपहर शाम, पृष्ठ 117

112· कमलेश्वर - सुबह दोपहर शाम, पृष्ठ 123

113· कमलेश्वर - सुबह दोपहर शाम, पृष्ठ 153

114· कमलेश्वर - सुबह दोपहर शाम, पृष्ठ 155-156

115· कमलेश्वर - सुबह दोपहर शाम, पृष्ठ 157

116· कमलेश्वर - सुबह दोपहर शाम, पृष्ठ 160